श्री वासुपूज्यस्वामिने नमः

दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः

पू. गणनायक श्री सुखसागरसद्गुरुभ्यो नमः

श्री हॉसपेट एम. जे. नगर की पावन धरा पर
श्री पार्श्व पद्मावती आराधना भवन के
भव्यातिभव्य उद्घाटन समारोह प्रसंगे
सादर सस्नेह आत्मीय अनुभूति के साथ

आमंत्रण

शुभ मुहूर्त
वि. सं. 2071 पौष वदि 6,
शुक्रवार, ता. 12 दिसम्बर 2014
प्रातः 9 बजे

पावन निश्रा
पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
आदि ठाणा

आशीर्वाद
पू. माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा.
पू. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

स्व. श्रा. [illegible] पालरेचा

स्व. श्रीमती [illegible] पालरेचा

निवेदक
शा. जेठमल, बाबुलाल, रतनचन्द, दिलीपकुमार,
महेन्द्रकुमार, कान्तिलाल, आनन्द, भरत,
श्रीपाल, सिद्धार्थ, अरिहंत, श्रेयांस, हर्षित, दक्ष
समस्त पालरेचा (खिमानी) परिवार सम्पर्क: 94483 58112

सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

▪ वर्ष : 11 ▪ ▪ अंक : 8 ▪ ▪ 5 नवम्बर : 2014 ▪ ▪ मूल्य : 20रु. ▪

|| अपूर्व अवसर || || अपूर्व अवसर ||

|| ॐ ह्रीं अर्हम् नमः ||

|| परम तारक शासनपति महावीर स्वामी ने नमः ||

|| दादा श्री जिनदत्त मणिधारी कुशल चन्द्रसूरी गुरुभ्यो नमः ||

श्री कन्याकुमारी नगरे

भव्य जिन मंदिर, दादाबाड़ी, गुरु मंदिर की

भव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा

आज्ञा प्रदाता	निश्रा प्रदाता
प. पू. आ. भ. श्री जिनकैलाशसागरसूरीश्वरजी म. सा.	उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

महोत्सव प्रारंभ	भव्य वरघोड़ा	पावन प्रतिष्ठा
फाल्गुन सुदी 6	फाल्गुन सुदी 8	फाल्गुन सुदी 9
24. 2. 2015	26. 2. 2015	27. 2. 2015

निवेदक : श्री जैन तीर्थ संस्थान, (रामदेवरा)

250 (268), लायड्स रोड, रायपेट्टा, चैन्नई - 600 014

सम्पर्क सूत्र

मोहनचंद ढढ्ढा	खगदावरमल जैन	राजेश गुलेच्छा
98410 94728	93441 03444	94441 59777

श्री कन्याकुमारी जैन मंदिर

वेस्ट कोवलम रोड, कन्याकुमारी (T.N.) फोन : 04652 246240

इचलकरंजी में दीक्षार्थी अभिनन्दन समारोह

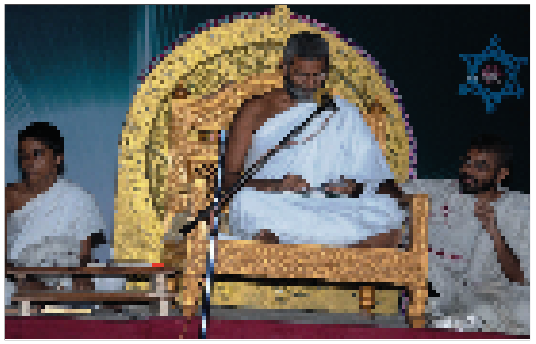

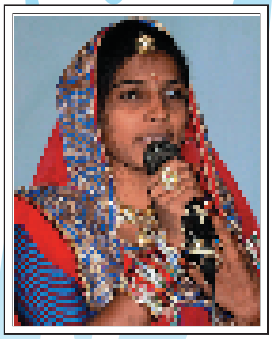

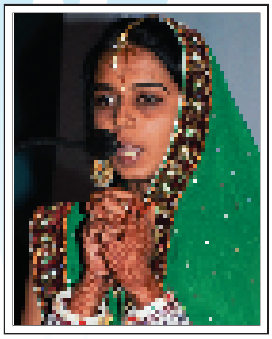

आगम मंजूषा

आचार्य भद्रबाहुसूरि

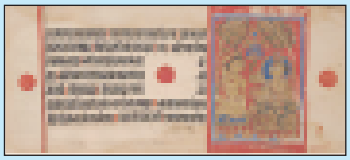

अणथोवं वणथोवं अग्गीथोवं कसायथोवं च।
ण हु भे वीससियव्वं, थोवं पि हु ते बहु होइ॥

आव.नि.120

ऋण, व्रण(घाव), अग्नि और कषाय- यदि इनका थोड़ा-सा अंश भी है, तो उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। ये अल्प भी समय पर बहुत (विस्तृत) हो जाते है।

पूज्य श्री की निश्रा में आगामी कार्यक्रम

ता. 06.12.2014 हुबली में अंजनशलाका प्रतिष्ठा एवं दीक्षा
ता. 12.12.2014 हॉस्पेट में आराधना भवन का उद्घाटन
ता. 15.12.2014 बल्लारी में दीक्षा समारोह
ता. 21.01.2015 ईरोड़ में अंजनशलाका चल प्रतिष्ठा
ता. 26.01.2015 तिरूपुर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा
ता. 02.02.2015 कोयम्बतूर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा
ता. 27.02.2015 कन्याकुमारी में अंजनशलाका प्रतिष्ठा
ता. 07.03.2015 तिरूनेलवेली में श्री मनमोहन पार्श्वनाथ ज्ञान ध्यान मंदिर का उद्घाटन
ता. 26.04.2015 चेन्नई में धर्मनाथ मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	05
2. गुरुदेव की कहानियाँ	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	07
3. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	08
4. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	11
5. श्रमण चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	13
6.मैं कौन हूँ???	मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.	17
7. विहार डायरी	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	19
8. देश भक्त संत : जिनकांतिसागरसूरिजी	मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.	23
9. मेरी अनुभुति	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	25
10. संघो सरणं तु सव्वेसिं	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	30
11. क्या करते हैं हमेशा खुश रहने वाले	प्रस्तुति : कैलाश बी. संखलेचा	33
11. चतुर्भंगी का चमत्कार	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	34
12. पंचांग	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	35
13. समाचार दर्शन	संकलन	36
14. जहाज मंदिर पहेली 100 का दत्तर		48
15. जहाज मन्दिर पहेली-103	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	49
16. जहाज मंदिर पहेली 101 का दत्तर		51
17. जटाशंकर	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	54

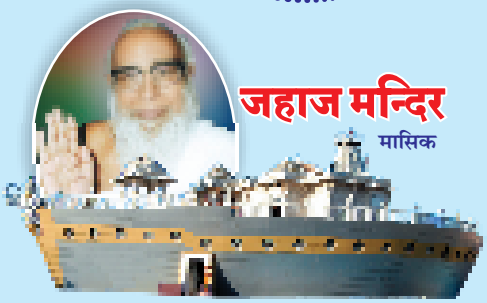

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 11 अंक : 8 5 नवम्बर 2014 मूल्य 20 रू.

संयोजन : आर्य मेहुलप्रभसागरजी म.
अध्यक्ष : संघवी जीतमल दांतेवाड़िया
महामंत्री : डॉ. यू.सी. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद् संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	: 15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	: 11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	: 9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ	: 7,000 रूपये
अन्दर आधा पृष्ठ	: 3,500 रुपये
एक चौथाई पृष्ठ	: 2,000 रुपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

नवप्रभात

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.

सुखी जीवन का राज

मैं एक श्रावक से वार्तालाप कर रहा था। बचपन की कुछ पुरानी स्मृतियाँ साझा हो रही थी। बचपन की बातों को याद करके वह कह रहा था- मैं छोटे-से गांव में रहता था। स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था। गायें चराने जंगल में जाया करता था। दिन भर जंगल में आराम से घूमना... फलों का मधुर स्वाद लेना... शाम होते ही घर चले आना... और खा पी कर सो जाना!

क्या जिन्दगी थी! कोई तनाव नहीं... कोई पीडा नहीं... कोई चिन्ता नहीं!

बाद में स्कूल जाना नियमित प्रारंभ हुआ। पर तब भी मन बैचेन न था।

पर ज्यों ज्यों बडे होते गये... त्यों त्यों चिन्ताओं का विस्तार होता गया।

मैं विचार करने लगा। चिंता का कारण विस्तार है। पीडा का कारण फैलना है।

हम हैं कि जिन्दगी भर केवल और केवल विस्तार में लगे हैं।

पदार्थों का विस्तार, आसक्ति का विस्तार, व्यापार का विस्तार... बंगलों का विस्तार...

और मुश्किल यह है कि इस विस्तार की कल्पना में हम सुख का अनुभव करते हैं। सुख के लिये ही विस्तार करते हैं और दुखी हो जाते हैं।

सोचा तो यही था कि जितना ज्यादा विस्तार होगा, उतना सुखी हो जाऊँगा!

पर हुआ उल्टा!

जितना ज्यादा विस्तार किया, वह उतना ही दुखी होता चला गया।

गांव की नींद में कितनी गहराई थी! कितना चैन था!

यहाँ तो नींद के लिये दवाई का प्रयोग करना पडता है।

गांव में सुबह उठता था तो कितनी ताजगी के साथ!

यहाँ उठता हूँ उनींदी आँखें लिये... सिर पर जैसे बोझ लिये...!

बहुत भाग दौड हुई। बहुत बांहें फैलायी मैंने! अब समेटने का पुरूषार्थ करो।

आसक्ति को समेटो! मन को समेटो!

शहर की भागदौड वाली जिन्दगी से भाग कर वही गांव वाली जिन्दगी में रम जाओ। फिर चलो जंगल की ओर... प्रकृति के बीच अपनी प्राकृतिक जीवन की सोच के साथ! मन को विस्तार से मुक्त करो। यही सुखी जीवन का राज है।

दीपावली के पावन पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

Salem Stainless Steel Suppliers Pvt. Ltd.

Espee Trades & Exports Pvt. Ltd.

Fouress Agro Exports

"Kalapurna Chambers", #20, Ekambareswar Agraharam,
Park Town, CHENNAI - 600003 (India)
Phone : +91 4423463050, +91 4443233050
4sindia.com, ssssgroup.com, 4sindia@gmail.com

संघवी शातिलाल-सुशीलादेवी, संघवी मदनलाल-मंजुलादेवी,
संघवी डूंगरमल-पवनीदेवी, संघवी महेन्द्रकुमार-मौसमीदेवी,
संघवी इन्द्रमल-पुष्पादेवी, संघवी रमेशकुमार-मंजूदेवी एवं समस्त

स्व. संघवी श्री मातुश्री लसुबाई पुखराजजी हंसराजजी
दांतेवाड़िया परिवार, मांडवला, हाल चेन्नई

गुरूदेव की कहानियाँ

1.

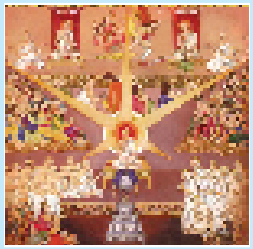

सुखी होने का रहस्य

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.

एक राजा हवाखोरी के लिये सहयोगियों/सेवकों के साथ महल से निकला। जंगल में उसे एक कुटिया दिखाई दी। जिज्ञासा-भाव ने उसे कुटियां में पहुँचा दिया। सामने ही एक महात्मा बिराजमान थे। उनके चेहरे पर ओजयुक्त शान्ति का साम्राज्य छाया था। राजा ने नमस्कार किया और चारों ओर दृष्टि घुमाई।

राजा यह देखकर हैरान था कि इस साधन-विहीन कुटिया में यह बाबा कैसे रहता होगा?इतनी छोटी-सी कुटिया में महात्मा को कैसे शान्ति मिलती होगी?महात्माजी ने राजा के मनोभावों को पढ़ लिया।

राजा ने कहा-महात्माजी! आपको कोई लकलीफ हो! कष्ट हो! मैं आपकी सेवा में हाजिर हूँ!

दूसरे दिन महात्मा अपना भिक्षा पात्र लिये हुए राजमहल में राजा के सामने था।

महात्मा ने राजा की आँखों से झांकते प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा-राजन्! मेरा पात्र अशर्फियों से भर दो।

राजा ने मुस्कराते हुए उस छोटे से पात्र को देखा और मुट्ठी भर अशर्फियाँ डाल दीं। राजा आश्वर्य चकित था कि मुट्ठी से भर जाने वाला वह छोटा-सा पात्र पूरी मुट्ठी से भी नहीं भरा था। राजा ने अशर्फियाँ डालनी शुरू की। राजा का चेहरा नये-नये भावों-विकल्पों से घिरा जा रहा था।

महात्मा के तेजोमय चेहरे को देखते ही वह जिद्द में लौट जाता। वह सोचने लगा कि क्या महात्मा मुझे पराजित करना चाह रहे हैं?क्या मैं एक छोटा-सा पात्र भी नहीं भर सकता?अशर्फियों से भरे दो घड़े उस पात्र में समा गये, पर पात्र खाली का खाली था।

राजा हैरान परेशान हो गया। उसकी आँखें उदास हो गई। महात्मा ने राजा के चेहरे को किताब की तरह पढ़ा। उसके मन में अटके पश्न का समाधान करते हुए कहा-राजन्! यह पात्र सामान्य नहीं है। यह वासना का पात्र है। यह कभी भर नहीं सकता। जो व्यक्ति वासना/आकांक्षा ग्रस्त है, वह हमेशा अभाव में जीता है और जो व्यक्ति प्राप्त सामग्री को अहोभाग्य समझकर संतोष से अपनाता है, वही सुखी व शान्त हो सकता है। स्वल्प-साधनों में भी सुखी होने का यही गुरूमंत्र है।

महात्मा के सुखी होने का रहस्य राजा को प्राप्त हो गया था।

दिल से

जिंदगी दो दिन की है।
एक दिन आपके हक में है
और एक दिन आपके खिलाफ।
जिस दिन हक में हो गरुर मत करना
और जिस दिन खिलाफ हो,
थोड़ा सब्र जरुर करना।

-चन्द्रकुमार जैन

प्रीत की रीत

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

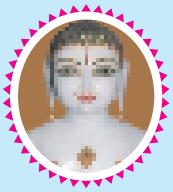

श्री चन्द्रप्रभजिन स्तवन

साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजीम.

श्री चन्द्रप्रभ जिन पद सेवा, हेवाए जे हलियाजी।
आत्म गुण अनुभव थी मलिया, ते भवभय थी टलियाजी ॥१॥

परमात्मा श्री चन्द्रप्रभजिन की सेवा की जिनकी आदत बन चुकी है। वे भक्त आत्म गुणों का अनुभव करते हैं। उस आनंद का उपभोग करते हैं और अन्त में कर्मक्षय करके मोक्ष को उपलब्ध हो जाते हैं।

प्राणी जब तक मुक्त नहीं होता तब तक वह कर्म तो करता ही है। कुछ कर्म वह रूचि भाव से करता है और कुछ आरोपित करने पडते है। पदार्थों से चूंकि आत्मा का अनादि काल का संबंध है अत: पदार्थों को पाने का कर्म कठिन होते हुए भी वह रूचि भाव से करता है। इतना ही नहीं, उन्हें पाने के लिये वह शारीरिक सुखों का, परिजनों का भी त्याग करने को तत्पर रहता है परंतु अपने अन्त:स्तल में रहे आनंद को चूंकि उसने देखा नहीं है अत: उसे पाने में उसका रूचिभाव नहीं जग पाता। जब रूचिभाव ही नहीं है तो उस दिशा में वह कर्म भी नहीं करता। व्यक्ति में अध्यात्म का रस सहज ही नहीं जगता। उसे जगाने के लिये आलंबन चाहिये।

प्रभु का आलंबन अध्यात्म की रूचि जगा सकता है। एक बार अगर परमात्मा के प्रति रूचि जग जाय, उनके प्रति समर्पण के भाव जग जाय तो फिर वह क्रिया न समय से जुडती है और न स्थान से! फिर वह आत्मा के रोम-रोम में बस जाती है। स्थान अथवा समय से जुडी क्रिया जीवन से अलग पड जाती है। वह जीवन में प्रतिपल प्रवहमान नहीं रहती। भक्त मंदिर में जायेगा तभी भक्ति करेगा। अतिरिक्त समय तो वह पर पदार्थों में और अन्य सांसारिक क्रियाओं में उलझा रहेगा। जबकि उपरोक्त पद्य के अनुसार तो असली भक्ति वह है जो उसकी आदत से जुड जाय। उसे किये बिना वह रह ही नहीं सके।

श्वास लेना और छोडना जैसे प्राणी का स्वभाव है वैसे प्रभु की सेवा यानि उनकी आज्ञा का पालन भी श्वास की क्रिया के साथ जुड जाना चाहिये। अगर सेवा सांसों में समा जाय तो उसका आनंद भी भिन्न ही होगा। सुख के अद्‌भुत हिलोरें आत्मा में उठने लगते हैं। जीव स्वभाव गत सुखों से विभोर हो जाये हैं। एक अपूर्व और नवीन आभा से आत्मा के समस्त प्रदेश झिलमिल हो उठते हैं। अन्त में वह साधक समस्त कर्मों का समूल अंत कर शाश्वत और जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त रखने वाले मुक्तिधाम को उपलब्ध कर लेता है।

द्रव्य सेव वंदन नमनादिक, अर्चन वली गुणग्रामोजी।
भाव अभेद थवानी इहा, परभावे निष्कामोजी ॥२॥

द्रव्य पूजा के अंतर्गत सेवा, वंदन, नमन, अर्चना और स्तुति आदि का समावेश होता है। जिस पूजा से परमात्मा के साथ अभेद होने की भावना हो, पर-द्रव्यों की कामना न हो, वह द्रव्य सेवा भी उपयोगी है।

आराधना चार प्रकार से की जाती है। नाम स्मरण द्वारा, अपने श्रद्धेय की किसी में स्थापना करके, वंदना-सेवा-पूजा आदि द्वारा एवं भावों द्वारा! यद्यपि कुछ लोग मात्र भावपूजा को ही महत्वपर्ण मानते है। परंतु द्रव्य पूजा के महत्व को भी अस्वीकार नहीं

किया जा सकता। प्रसन्नचंद्र राजर्षि का दृष्टांत इसका सशक्त प्रमाण है। प्रसन्नचंद्र राजा, प्रभु महावीर के शिष्य बनते हैं। एक बार वे कायोत्सर्ग ध्यान में लीन थे तभी सम्राट् श्रेणिक के दो सैनिक उसी रास्ते से पसार हुए। उसमें से एक सैनिक ने राजर्षि की ध्यान-लीन चेतना को अहोभाव से बधाया तो दूसरे ने उनकी निंदा करते हुए राजर्षि के राज्य पर पडौसी शत्रु द्वारा मंडराते संकट की चर्चा की।

राजर्षि ने दोनों ही चर्चा को सुन लिय। मन में विकल्पों का ताना-बाना बुना जाने लगा। ध्यान की तल्लीनता टूट गयी। और मानसिक विकल्पों द्वारा ही उन्होंने युद्धभूमि का निर्माण कर कल्पित शत्रु के साथ युद्ध प्रारंभ कर दिया। कल्पना द्वारा ही शस्त्र अस्त्रों का निर्माण हो गया। एक-एक कर शस्त्र समाप्त होते गये। अन्त में सारे शस्त्रों के समाप्त होने पर अपने मस्तक पर रखे हुए मुकुट को उतारने के लिये हाथ लंबाया और ज्योंहि मुंडित माथे का भान हुआ कि पश्चात्ताप और पीडा से भर गये ऋषि!

ओ...हो... मैं साधु और कषायों की मैंने यह कैसी होली खेली?क्या मैं इस विपरीत क्रिया से अपनी आत्मा को हल्का बना पाऊँगा?और इतिहास साक्षी है कि मात्र विचार तरंगें उन्हें सातवीं नरक तक भी ले जाती है तो कुछ समय बाद ही क्रमशः उत्थान की सीढियाँ चढते वे शुक्ल ध्यान में भी प्रवेश कर जाते हैं।

द्रव्य पूजा निरर्थक नहीं है। मंजिल को पाने के लिये सीढी आवश्यक है। एकदम से आत्मा परमात्मा नहीं बनती। आम जनता को उसके लिये पहले सगुण का आलंबन लेना पडता है। वंदना, पूजा, अर्चना ये समस्त क्रियाऐं द्रव्य क्रिया हैं। जितनी भी बाह्य क्रिया है वे सारी द्रव्य क्रिया हैं। द्रव्य क्रिया का उपयोग है। पर वह तब, जब भाव भी उससे जुडे। अगर द्रव्य क्रिया में भाव का अभाव है। तो वह निरर्थक और मात्र बाल-लीला के रूप में ही नजर आती है। द्रव्य क्रिया के माध्यम से व्यक्ति भाव से जुडे तो ही क्रिया का परिणाम उपलब्ध होता है। द्रव्य का अभाव अध्यात्म में चल सकता है। परंतु भावों के अभाव में वह क्रिया शून्य है। उसका परिणाम भी शून्य है।

भाव सेवा अपवादे नैगम, प्रभु गुणने संकल्पे जी।
संग्रह सत्ता तुल्यारोपे, भेदाभेद विकल्पेजी ॥३॥

संकल्प को विषयादिक से हटाकर प्रभु गुण में लगाने को नैगम नय से भाव सेवना जानना चाहिये। प्रभु के समान ही अपनी सत्ता का चिंतन करने की रूचि को संग्रह नय से भाव सेवना समझना चाहिये।

सात नयों की व्याख्या जैन दर्शन की अनूठी और संपूर्णतः मौलिक अवधारणा है। जैन दर्शन यह स्पष्ट मानता है कि किसी भी वाक्य में इतना सामर्थ्य नहीं कि वह संपूर्ण सत्य को अपने में समेट सके। प्रत्येक वाक्य सत्य के आंशिक रूप को ही विवेचित कर सकता है। वस्तु के अनंत धर्मों में से एक समय में किसी एक धर्म की अपेक्षा को लेकर वस्तु के प्रतिपादन करने की शैली को नय कहते हैं। इसीलिये जितनी तरह के वचन होते हैं, उतने ही नय हो सकते हैं। नय के एक से लेकर संख्यात भेद तक हो सकते हैं। सामान्य रूप से सात नय माने हैं। नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ और एवंभूत! इन पद्यों में श्रीमद्जी ने नयों को विविक्त करते हुए प्रभु दर्शन के साथ उनका संबंध घटाया है।

संकल्प को विषयवासना से हटाकर उसे प्रभु गुण में लगाना, नैगम नय से भाव सेवना है। प्रभु के समान ही मेरी अपनी सत्ता और शक्ति है, मेरे और प्रभु के मध्य में किसी प्रकार का निश्चय नय की अपेक्षा से भेद नहीं है, परंतु मैं इस समय द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव से भिन्न हूँ, इस प्रकार से भिन्नाभिन्न का सापेक्ष दृष्टिकोण से चिंतन कर अपने शुद्ध चैतन्य को प्रकट करने की रूचि को संग्रह नय से अपवाद भाव सेवना कहते हैं।

इस पद्य में उत्सर्ग और अपवाद इन दो शब्दों का विशेष प्रयोग हुआ है। उत्सर्ग और अपवाद शब्द से यहाँ तात्पर्य निश्चय और व्यवहार, करण और कार्य से है। निश्चय को अभिव्यक्त होने के लिये व्यवहार नय की आवश्यकता है। कारण कार्य के रूप में परिणमन करके ही अपनी पहचान बनाता है। कारण को कार्य की जरूरत हैं। चेतना शुद्ध है, यह निश्चय नय है, परंतु उसे प्रकट होने के लिये आलंबन की जरूरत है, यह व्यवहार नय है। परमात्मा का प्रतिबिम्ब चेतना को प्रकट करने के लिये आधार बनता है। प्रस्तुत पद्य के द्वारा श्रीमद्जी ने इन्हीं भावों को उभारा है।

(क्रमशः)

दीपावली के पावन पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

कैलाशकुमार देवीचन्दजी मालू

झाक वाले

Kailash Traders

(An ISO 9001:2008 & OHSAS:2007 Company)

Electrical Equpiment, Suppliers & Contractors

Rain Basera, Chohtan Road, BARMER - 344001(Raj.)

Mobile : 081075149145, 09001739201

Web : www.kailashtraders.com — E-mail : kailashtradersbmr@yahoo.com

संस्मरण

32

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

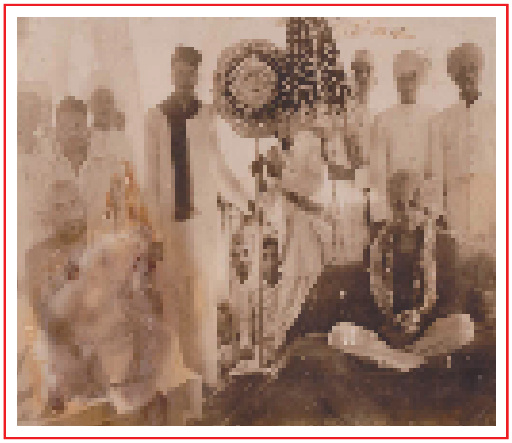

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. का व्यक्तित्व अपने आप में अद्‌भुत था। मैंने तो उन्हें वृद्ध अवस्था में ही देखा था। पर उनकी युवा अवस्था का चित्र जब मैं देखता हूँ तो मुग्ध हो जाता हूँ। उनका आकर्षक चेहरा... तेजस्विता से परिपूर्ण ललाट... बचपन से साधना का तेज उनकी आँखों में छाया हुआ... कितना भी बडा व्यक्ति क्यों न हो, पूज्यश्री के दर्शन करता और आकृष्ट हो जाता।

राजा महाराजाओं का समय पूर्ण हो चुका था। आजादी प्राप्त हो गई थी। स्वतंत्रता का बाल्य-काल चल रहा था। 15 अगस्त 47 को आजादी मिली थी। और लगभग डेढ महिने बाद ही चतुर्थ दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की पुण्यतिथि का विशिष्ट अवसर था।

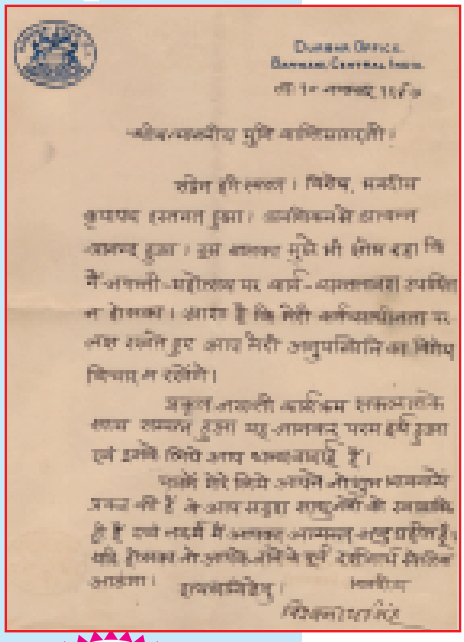

पूज्यश्री का चातुर्मास खेतिया में था। खेतिया उस समय बडवानी स्टेट में आता था। इस पर शासन था हिज हाईनेस महाराणा बहादुर श्री देवीसिंहजी सरकार का!

उम्र उनकी छोटी थी। वे पूज्यश्री के परम भक्त थे। उन्हें पूज्यश्री से संपर्क कराने वाले थे बडवानी स्टेट के महामंत्री श्री विश्वनाथसिंहजी! मध्यप्रदेश से खान्देश की ओर विहार करते समय उनका संपर्क हुआ था। वे पूज्यश्री से इतने अधिक प्रभावित हुए थे कि उन्होंने अपना आचार विचार, खान पान जैन धर्म के अनुसार स्वीकार कर लिया था।

खेतिया चातुर्मास में दादा गुरुदेव की पुण्यतिथि का आयोजन था। स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही भारतीय गणतंत्र की व्यवस्था का श्रीगणेश हो गया था। पर अभी भी आम जन मानस में राजा महाराजाओं के प्रति पूर्ण आदर, सम्मान का भाव जागृत था। स्टेट के प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथसिंहजी ने महाराणा को खेतिया समारोह में आने के लिये तैयार किया।

महाराणा के आगमन ने खेतिया के वातावरण में ऊर्जा पैदा कर दी। जैन धर्म व पूज्य गुरुदेवश्री की अनूठी महिमा हुई। हाँलाकि महाराणा के खेतिया आगमन में मुख्य भूमिका निभाने वाले श्री विश्वनाथसिंहजी स्वयं राज कार्य में व्यस्त होने के कारण नहीं आ पाये। उन्होंने इस हेतु पत्र लिख कर क्षमायाचना भी की।

यह सब पूज्यश्री के दिव्य व्यक्तित्व का ही परिणाम था।

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

Montex®
PENS & REFILLS
Since 1976
Winner Ball Pen
Stylish Ball Pen
Mega Top Ball Pen
Classic Ball Pen
Monitor Ball Pen
Regal Retractable Ball Pen
Activa Gel Pen
Hyspeed Sparkle Gel Pen
M.R.P. ₹ 10/- Per Pc
E-mail : montex@montexpen.com
Website : www.montexpen.com

श्रमण चिंतन

25

दशवैकालिक सूत्र की प्रथम चूलिका का विवेचन

संसार के भोग : जन्म-मरण के रोग

मुनि श्री मनितप्रभसागर जी म.

संयम जीवन का अमृत है। जिसके मन में मोक्ष की तीव्र उत्कण्ठा नृत्य कर रही है, जिसे संसार के उपभोगों की निस्सारता समझ में आ चुकी है और जिसका चित्त जन्म, जरा और मृत्यु के भयावह दु:खों से संतप्त, दु:खी तथा उद्विग्न बना हुआ है, वह आराधक आत्मा ही संयम की भीनी भीनी सुगंध से जीवन-उपवन को खुशनुमा और महका-महका बना सकता है।

सूत्रकृतांग सूत्र में संयम का गुणोत्कीर्तन करते हुए कहा गया है- समस्त साधुओं के द्वारा मान्य एवं पूजनीय संयम धर्म पाप-कर्म का विनाश करने वाला है। इसी संयम धर्म की उत्कृष्ट आराधना के द्वारा अनेक भव्य जीव अपार संसार सागर से पार हुए हैं तथा अनेक जीवों ने सुरगति के ऐश्वर्य को प्राप्त किया है।

दशवैकालिक सूत्र की प्रथम चूलिका का चौदहवाँ सूत्र अपने आप में सुषुप्त आत्मा के लिये जागरण का घण्टनाद है **'बहुसाहारणा गिहीणं कामभोगा।'**

वत्स! जरा तूं संसार के भोगों की विषाक्तता और निस्सारता का विचार कर।

संसारी जीवों के सुखों में कोई नवीनता नहीं है। उसमें ऊब है, बोरियत है, हल्कापन और तुच्छता है।

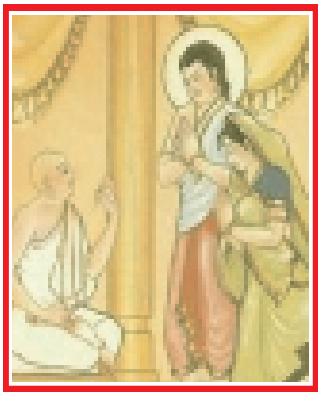

- आज अच्छा लगने वाला परिधान कुछ दिन बाद बेकार लगता है।
- आज सुखप्रद लगने वाला घर कुछ वर्षों के बाद कारागृह की भाँति कष्टप्रद प्रतीत होता है।
- आज मधुर लगने वाले रिश्तें बीतते समय के साथ विष की तरह अत्यन्त प्राणलेवा लगते हैं।
- आज सुन्दर दिखने वाली पत्नी ही एक दिन बीभत्स, रूपहीना और कुरूपा लगने लगती है।

इतना ही नहीं, यह शरीर जिसे जन्म के साथ अत्यन्त प्यार-दुलार से सजाया जाता है, संवारने के साथ संरक्षण प्रदान किया जाता है, वहीं शरीर जब व्याधियों का मंदिर, बुढापे का आवास और दु:खों का दावानल बन जाता है, तब व्यक्ति अपने शरीर से, अपने ही अंगों से घृणा करने लगता है।

एक नवयुवती को अपने सुंदर रूप-रंग का बडा अभिमान था। वह गर्व से फूली नहीं समाती हुई अन्य स्त्रियों को अत्यन्त तिरस्कार की नजरों से देखती थी। उसका अहंकार उसे इस प्रकार ले डूबा कि उसके शरीर में भयंकर रोग ने जन्म लिया। शरीर की शोभा विद्रुप हो गयी। चेचक रोग के धब्बों ने उसके चेहरे को बदरूप कर दिया।

- वत्स! तूं ही बता कि ये भोगोपभोग के साधन, सुविधाएँ और सुख कितने जानलेवा, भयंकर और कटु परिणाम वाले हैं।

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म. को शत-शत वंदन पुण्यतिथि 13 नवंबर 2014

संघवी अशोक एम. भंसाली

M.A. ENTERPRISES

Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)

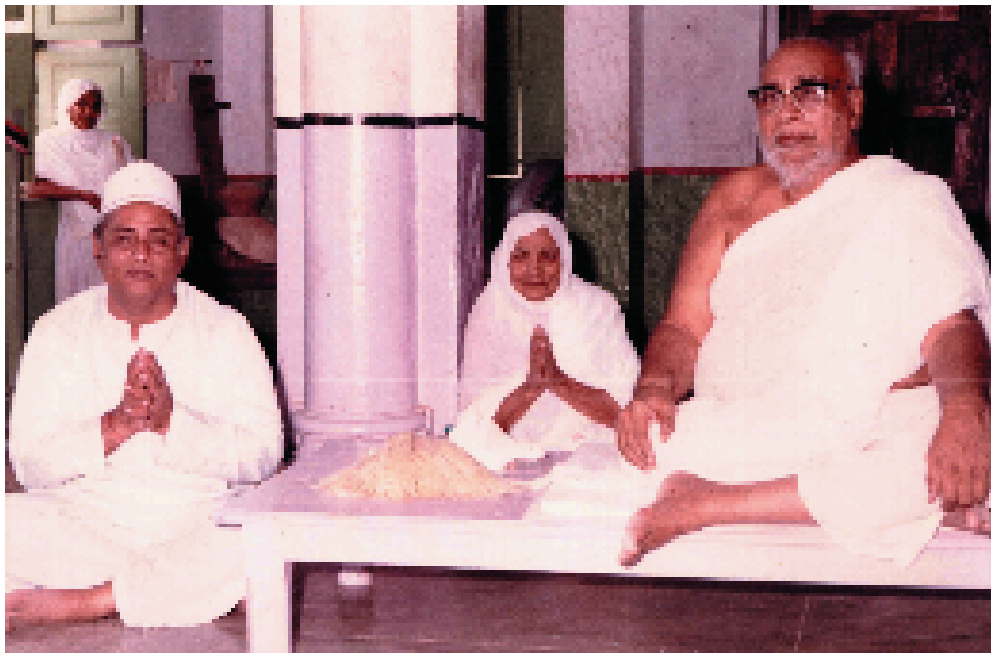

FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

- तूं ही सोच। पशु-पक्षी जिस संभोग में आनंद मानते हैं उन्हीं तुच्छ शारीरिक भोगों में सुख का अनुभव विवेकी मनुष्य कैसे कर सकता है?

राजा हो या रंक, अमीर हो या गरीब। वह रूखा-सूखा खाये-पीये तो वह सब गले से नीचे उतरते ही विष्टा, पेशाब आदि में परिवर्तित हो जाते हैं। और कोई छप्पन पक्वान्नों को खाये, तब भी वे सब अशुचि में बदल जाते हैं।

संभोग के जो स्थान हैं, वे भी तो कितने गंदे, बीभत्स, और हल्के हैं, इसलिये वानर और नर में 'वा' शब्द की जो भिन्नता है, वह 'भिन्नता' पशु योनि में विवेक का अभाव प्रदर्शित करती है।

संसार के कामभोगों, विषयभोगों और उपभोगों में कोई नवीनता नहीं है, और नवीनता के अभाव में सरसता नहीं मिल सकती जबकि साधु जीवन में भोगत्रयी का अभाव हैं।

- यहाँ इन्द्रियों का पोषण नहीं, उपयोग है।
- यहाँ साधनों का आकर्षण नहीं, उनसे विरति है।
- यहाँ ध्यान और ज्ञान के सुधारस में प्रतिपल नये रस की अनुभूति है।

मुनि! तुझे विचार यह करना है कि जब संयम जब इतना रसपूर्ण है तब निरस संसार में जाकर मुझे क्या करना?

देख, शास्त्रकार दीक्षा का महिमा-संगान किस प्रकार करते हैं-

दीक्षा सुधा सदा पेया, क्षीयते कर्मणां विषम्।
जायते सुतरां शांति, शाश्वतं च सुखं भवेत्॥

दीक्षा रूपी अमृत पीने से कर्म-विष नष्ट हो जाता है, इससे पूर्ण शांति और शाश्वत सुख की संपदा उपलब्ध होती है। इसीलिये हे वत्स! गृहवासी बनने के बासी विचार को छोड दे। इसी में तेरी आत्मा की भलाई है।

बिजापुर में पू. महत्तरा पदविभूषिता श्री चम्पाश्रीजी म.सा.

श्रद्धांजली सभा की झलकियाँ

श्री व्यापारीलालजी

With best compliments from :-

गोदावरीदेवी

अंजुदेवी-रतनलाल, कान्तादेवी-विनोदकुमार,
मंजुदेवी-गौतमकुमार, मीनादेवी-पारसमल,
कंचनदेवी-सुरेशकुमार (पुत्र-पुत्रवधु),
मौनादेवी-हितेशकुमार, रुपलदेवी-सुशीलकुमार
(पौत्र-पौत्रवधु), हिम्मतकुमार, विवेक,
वंदन, विपुल, रौनक (पौत्र),
भव्या, तनिषा (पौत्री),
कमलादेवी-सरदारमलजी चौपड़ा
(बहिन)

प्रतिष्ठान

रतनलाल गौतमकुमार
बोहरा ब्रदर्स

403, 603, Safal Flora,
Godha caup Road, Shahibag,
Ahmedabad - 380004
(R) 079-22680300, 22680460
(M) 09327002606, 09924477723

श्रीमती गोदावरीदेवी व्यापारीलालजी बोहरा (हालावाला) परिवार
रतनलाल व्यापारीलालजी बोहरा
8, शाहीकुटीर, शाहीबाग, अहमदाबाद-380 004.
टेली. : (079) 22869300

मैं कौन हूँ???

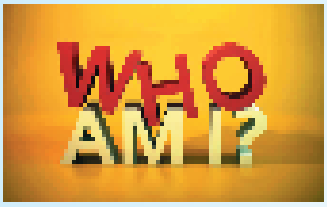

मुनि श्रेयांसप्रभसागरजीम.

किसी नगर में दो भाई रहते थे। दोनों में अपार प्रेम था। एक भाई दार्शनिक और दूसरा व्यापारी था। दार्शनिक के पास धन का अभाव था। और व्यापारी के पास अपार धन था। व्यापारी को अपने दार्शनिक भाई की बहुत चिन्ता थी। इसलिये अपने भाई के लिए एक लाख रूपए बैंक में जमा करवाकर वह व्यापार हेतु विदेश गया।

विदेश जाने से पहले उसने अपने भाई से कह दिया दिया था कि बैंक में लाख रूपए जमा है, जब भी आवश्यकता लगे, ले लेना। वर्ष के पश्चात व्यापारी अपने देश आया। उसने अपने भाई की खराब स्थिति देख अपार दु:ख हुआ। व्यापारी भाई ने आवेश में कहा- मैंने तुम्हारे लिए लाख रूपए बैंक में जमा कराये और तुमने उसका कोई उपयोग नहीं किया?

दार्शनिक भाई ने कहाँ- मैंने बैंक से एक पैसा नहीं लिया। व्यापारी ने अहंकार से भरकर कहाँ- मैंने एक वर्ष में करोड़ों रूपए कमाएं, कई कारखाने खुलवाएं। पर तुमने क्या किया?

दार्शनिक ने मुस्कुराते हुए कहा- तुम कह रहे हो मैंने कमाए, मैंने किया। मैं उसकी खोज में हूँ यह 'मैं' कौन हैं? व्यापारी के पास इसका कोई उत्तर न था। 'मैं' को समझना ही बडा मुश्किल काम है।

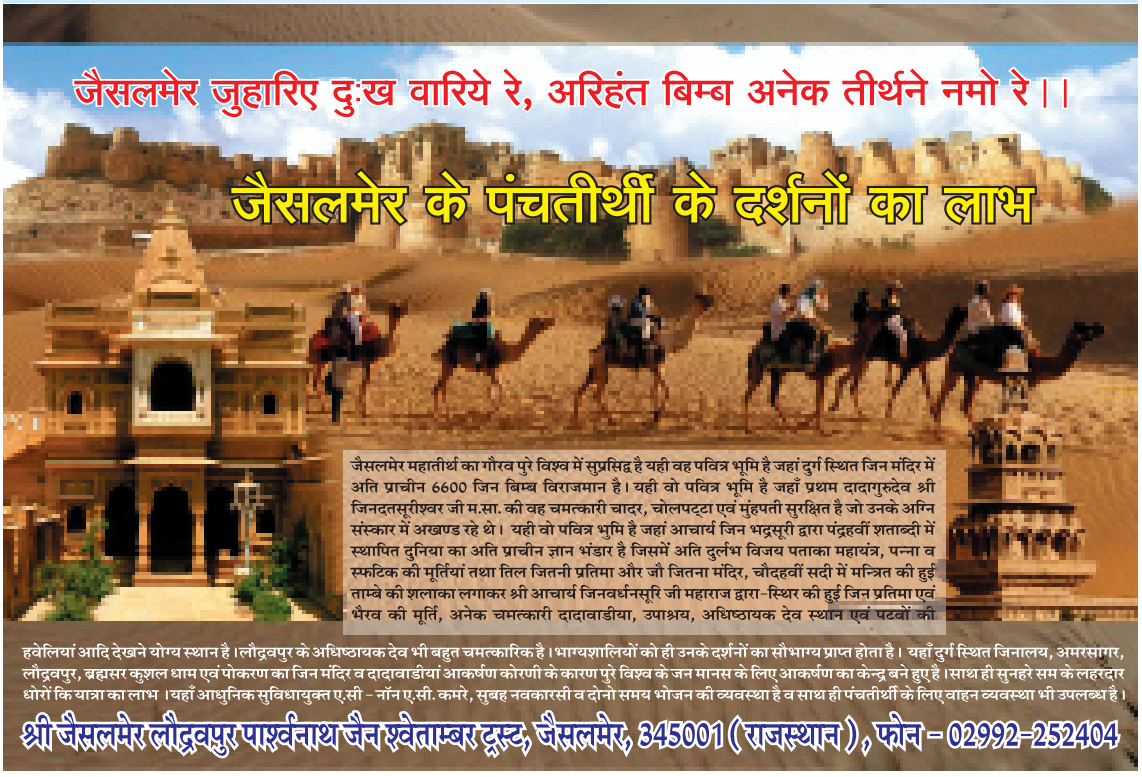

दीपावली के पावन पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

कमलसिंह रामपुरिया

अध्यक्ष

जैन श्वेताम्बर सोसायटी, मधुवन

सम्मेतशिखरजी महातीर्थ

RAMPURIYA MANSION

17/3, Mukharam Kanoria Road, HOWRAH-711101

Ph. 2666-7212, 7225

विहार डायरी

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.

खरतरवसहि के पाटिये के संबंध में चर्चा चल रही थी। शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी एवं पूज्य आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के मध्य चल रहे वार्तालाप और पत्र व्यवहार के परिणाम स्वरूप ऐसा प्रतीत हो रहा था कि कार्तिक सुदि 7 ता. 24.10.29 के पत्र के उपरान्त अब खरतरवसही का पाटिया शीघ्र ही लग जायेगा। उसी दिन अजमेर के सुप्रसिद्ध नगर सेठ श्रावक श्री धनराजजी लूणिया ने भी पेढी के नाम पत्र लिखा–

कार्तिक सुदि 7 सं. 1986

ता. 24.10.29 अजमेर

श्रीमान् सेठ आणंदजी कल्याणजी, हिंदुस्थान ना समस्त श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन कौम ना प्रतिनिधि, जवेरीवाड, अमदाबाद!

जयजिनेन्द्र!

आपका पत्र नंबर 2928 ता. 17.9.29 का समस्त संघ अजमेर के नाम का आया। उत्तर में निवेदन है कि यह युग संघटन का है। इस युग में आपको वही कार्य करना चाहिये जिससे सर्व जैनी एक सूत्र में संघटित होकर जैन धर्म की उन्नति कर सके। इस समय प्रत्येक धर्मावलम्बी अपने-अपने धर्म की उन्नति के कार्य में लगे हुए हैं। परन्तु जैनियों को देखते हैं तो वे आपस में कलहाग्नि फैला रहे हैं। जिससे जैन धर्म की हीलना होती है। इस समय आप खरतरवसी टूंक पर खरतरवसी नाम का जो पाटिया पहिले था, उसको नहीं लगाने का जो झगडा कर रहे हैं इससे हिन्दुस्थान ना समस्त जैन संघ में हलचल मच गई है और इस आपस के झगडे में जैन धर्म को बहुत नुकसान पहुँचने की संभावना है। इस कारण मेरी तो आपसे प्रार्थना है कि ऐसा कार्य कीजिये जिससे आपस में झगडा न बढे।

कृपा करके आप मेरे को लिखें कि मु. पालीताना में जो सब वसी है, उन प्रत्येक वसी पर किस-किस नाम का पाटिया लगा हुआ है। इसका हाल विस्तार पूर्वक शीघ्र लिखियेगा।

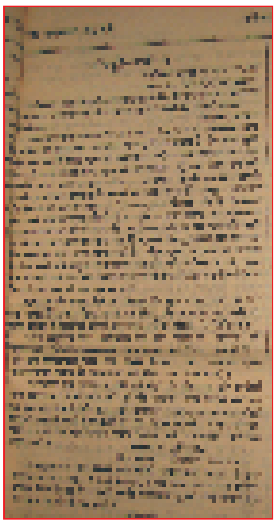

आप आनंदजी कल्याणजी की पेढी के विषय में समाचार कौन से समाचार पत्र द्वारा प्रकाशित कराते हैं। सो उस समाचार पत्र का नाम लिखने की अवश्य कृपा कीजियेगा। ताकि मैं उस पत्र को मंगा कर देख सकूं।

आणंदजी कल्याणजी की पेढी के हिसाब की रिपोर्ट यदि छपा कर प्रकाशित की हो तो उसकी एक कापी मेरे को भी अवश्य भेजने की कृपा कीजियेगा। यदि आज तक कोई रिपोर्ट आपने नहीं निकाली हो तो कृपा करके उत्तर दीजियेगा। इस पत्र का उत्तर नीचे लिखे पते पर शीघ्र देने की कृपा करें।

धनराज लूणिया
ठि. लाखन कोटडी, अजमेर।

श्री धनराजजी द्वारा लिखे इस पत्र का कोई उत्तर पेढी की ओर से जब उन्हें नहीं मिला। तो 12 नवम्बर को एक और पत्र भेज कर उन्हें याद दिलाया।

कुल मिला कर पाटिये के इस विवाद ने विस्तृत रूप धारण कर लिया था। भारत भर के संघ इस विवाद से चिंतित थे। न केवल खरतरगच्छ संघ अपितु अन्य संघों में यह वातावरण चल रहा था कि पेढी को यह पाटिया शीघ्र लगा देना चाहिये।

इस बीच घोषणानुसार ता. 19 नवम्बर से 21 नवम्बर 1986 तक त्रिदिवसीय खरतरगच्छ संघ का विशाल सम्मेलन आयोजित हुआ। पूज्य आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से उनकी पावन निश्रा में यह सम्मेलन संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में पूरे भारत के खरतरगच्छ संघ के आगेवान श्रावक उपस्थित थे। यह सम्मेलन मुख्य रूप से खरतरवसही नाम के पाटिये को लगाने के लिये एक आंदोलन था। इस सम्मेलन से पूरे भारत में एक अनूठा वातावरण तैयार हुआ था।

खरतरगच्छ को संगठित करने का यह पहला-पहला आयोजन था। इससे पूर्व गच्छ का कोई भी अखिल भारतीय स्तर पर सम्मेलन का आयोजन नहीं हुआ था।

पूज्य आचार्यश्री ने इस सम्मेलन के संबंध में मानसिक योजना का तानाबुना बुना था। उन्होंने चिंतन किया था कि वर्तमान में प्रश्न खरतरवसही का है। इस प्रकार के अनेक प्रश्न भविष्य में भी आते रहेंगे। इन सभी प्रश्नों का निराकरण करने के लिये गच्छ को संगठित करना जरूरी है। क्योंकि संगठन में ही शक्ति है। इससे एक माहौल तैयार होता है।

उस समय और भी कई प्रश्न उपस्थित थे। खरतरगच्छ का अनुयायी वर्ग कम हो रहा था। श्रमण वर्ग तो बहुत ही कम संख्या में जा पहुँचा था। कहाँ

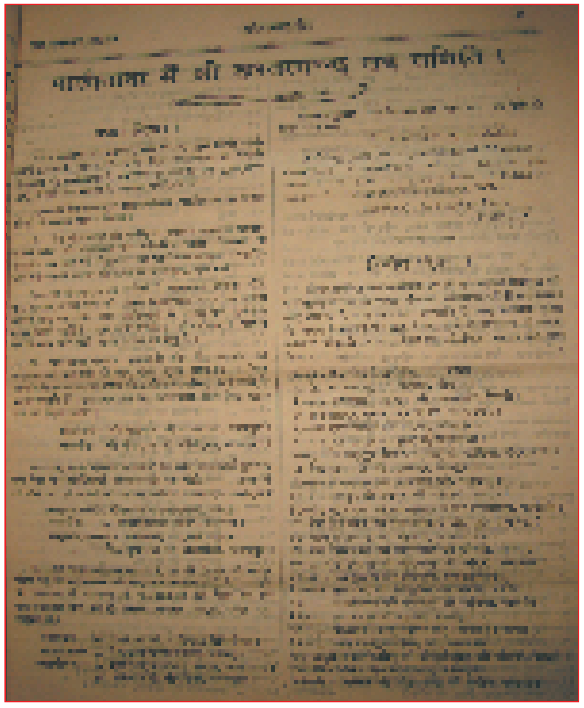

खरतरगच्छ की जाहोजलाली का वो समय, जब काल-खण्ड ने एक साथ हजारों श्रमणों से परिपूर्ण गच्छ को अपने नेत्रों से निहारा था। और कहाँ ऐसा समय आ गया जब श्रमणों की संख्या दहाई संख्या तक सिमट गई। जो भी था, सच को स्वीकार तो करना ही था।

श्रमणों व अनुयायियों की संख्या में कमी होने के कारण गच्छ-विरोधी द्वेषी मानसिकता वाले लोग अपने आन्तरिक द्वेष को अभिव्यक्त करने लगे थे। इन सब परिस्थितियों में गच्छ सुरक्षा का यह पहला और ठोस कदम था।

हमारे भंडार में उस सम्मेलन का कार्यवाही रजिस्टर उपलब्ध है। तदनुसार यह सम्मेलन ता. 19 नवम्बर 1929 मिगसर वदि 3 को पालीताणा में रणसी देवराज की धर्मशाला में पूज्य आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरिजी म. की पावन सान्निध्यता में संपन्न हुआ था।

उस सम्मेलन में मंगलाचरण श्री जिनदत्तसूरि ब्रह्मचर्याश्रम के छात्रों ने किया था। उस सम्मेलन की अध्यक्षता सेठ श्री रिद्धराजजी धारीवाल, लश्कर-ग्वालियर वालों ने की थी। उस सम्मेलन में पाटिये के संदर्भ पूज्य

आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरिजी म. जो पत्र व्यवहार व कार्रवाही कर रहे हैं, उसे संपूर्ण समर्थन एवं अनुमोदना देते हुए आणंदजी कल्याणजी पेढी को यह अल्टीमेटम दिया गया था कि यदि मिगसर सुद पंचमी तक पाटिया नहीं लगाते हैं तो हम अपनी ओर से कार्रवाही कर पाटिये को लगा देंगे।

तीन दिन तक लगातार चले इस सम्मेलन में मिगसर वदि पंचमी ता. 21 नवम्बर 1929 को श्री खरतरगच्छ संघ समिति की स्थापना की गई।

समिति की स्थापना के उद्देश्य स्पष्ट करते हुए पूज्य आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरिजी म. ने कहा- वर्तमान में अपने गच्छ की उन्नति के उपाय ढूंढने है। गच्छ में दिनोंदिन साधुओं, श्रावकों की कमी होती जा रही है, विरोधी अपनी मनमानी करते हैं। गच्छ की संपदा को नष्ट करने पर तुले हैं। गच्छ विरोधी साहित्य का विरोधियों द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है। इन सब बातों पर रोक तब तक नहीं लगाई जा सकती, जब तक हम संगठित नहीं होते। अतः एक ऐसी समिति की रचना बहुत जरूरी है, जिसमें पूरे भारत का प्रतिनिधित्व हो।

रायबहादुर श्री सुखराजरायजी, नाथनगर वालों को इस समिति का अध्यक्ष चुना गया। लाला माठुमलजी भणसाली, दिल्ली वालों को मंत्री बनाया गया। कार्यकारिणी के सदस्यों के रूप में शेठ पानाचंद भगुभाई सूरत, कालुरामजी कांकरिया-ब्यावर, सेठ रिद्धराजजी संपतराजजी धारीवाल लश्कर, सेठ हठीसिंह मानसिंह पारख जामनगर, श्री हजारीमलजी पारख जोधपुर, श्री शेरसिंहजी गोडवंशी कोटा, बाबु जवाहरलालजी लोढा आगरा को चुना गया।

जनरल समिति में पूरे भारत के माननीय सदस्यों को सम्मिलित किया गया-

दीवान बहादुर सेठ केशरीसिंहजी, कोटा
दीवान बहादुर सेठ थानमलजी लूणिया, हैदराबाद
रायबहादुर सेठ हीराचंदजी कोठारी, इन्दौर
रायबहादुर सेठ सिरेमलजी बाफना, प्राइम मिनिस्टर, इन्दौर रियासत
रायबहादुर सेठ लक्ष्मीचंदजी बोथरा, कटंगी
बाबू फूलचंदजी मोघा जज, सहारनपुर
बाबू गुलाबचंदजी मुंसिफ, लखनउ
सेठ साराभाई नेमचंद हाजी, मेंबर धारासभा, अमदाबाद
बाबू विनयचंदजी भांडिया वकील, भागलपुर
बाबू जमनालालजी चौपडा, वकील, रायपुर
बाबू उमरावसिंहजी टांक वकील, देहली
बाबू मोतीचंदजी नखत, कलकता
बाबू रायकुमारसिंहजी, कलकता
बाबू रतनलालजी मुकीम, कलकता
बाबू बनारसीदासजी जौहरी, कलकता
बाबू रिषभचंदजी दूगड, कलकता
बाबू हीरालालजी श्रीमाल अजीमगंज
बाबू लक्षमीपतजी कोठारी, अजीमगंज
बाबू इन्द्रचंदजी बोथरा, बालूचर
बाबू धन्नूलालजी संचेती, बिहारशरीफ
बाबू लाभचंदजी जौहरी, बनारस

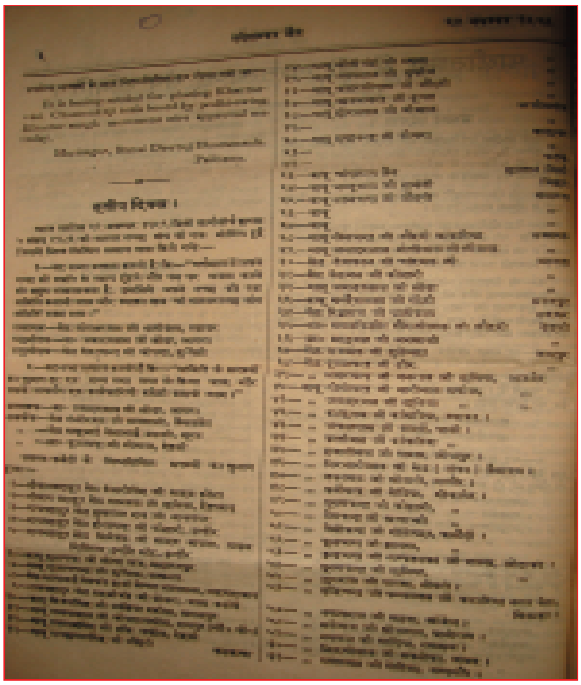

बाबू खेमचंदजी जौहरी कांकरिया, लखनउ
बाबू जवाहरलालजी मोतीलालजी श्रीमाल, लखनउ
सेठ तेजकरणजी चांदमलजी, आगरा
सेठ जेठमलजी कोठारी, आगरा
बाबू कन्हैयालालजी गोठी, भरतपुर
बाबू नवलकिशोर खैरातीलालजी जौहरी, देहली
सेठ राजमलजी गोलेच्छा, जयपुर
सेठ पूनमचंदजी ढोर, जयपुर
सेठ अमरचंदजी धनराजजी लूणिया, अजमेर
बाबू गोपीचंदजी धारीवाल वकील, अजमेर
बाबू जवाहरमलजी लूणिया, अजमेर
श्री अचलदासजी बलाई, पाली
श्री वस्तीमलजी कांकरिया, पाली
श्री गिरधारीलालजी सेठ रांका, जैतारण
श्री जवरमलजी कोठारी नागोर
श्री कर्मचंदजी सेठिया, बीकानेर
श्री पूनमचंदजी कोठारी बीकानेर
श्री प्रेमचंदजी खजांची बीकानेर
श्री नेमीचंदजी गोलेच्छा, फलोदी
श्री फूलचंदजी झाबक, फलोदी
श्री इन्द्रचंदजी संपतलालजी पारख, लोहावट
श्री पूनमचंदजी लूणिया लोहावट
श्री जुगराजजी पारख, तिवरी
श्री वृद्धिचंदजी पन्नालालजी कटारिया, नगर सेठ बिलाडा
श्री तखतराजजी मेहता, खीमेल
श्री सलेराजजी सोमावत, घाणेराव
श्री नथमलजी गादिया, रतलाम
श्री लिछमीलालजी संखलेचा, जावद
श्री प्रतापमलजी सेठिया, मंदसोर
श्री घमडसी जुहारमलजी शामसुखा, उज्जैन
श्री नथमलजी जौहरी, जावरा
श्री प्रेमराजजी चौरडिया, भानपुरा
श्री अखयसिंहजी बाफना, झालरापाटन
श्री छगनमलजी बाफना, उदयपुर
श्री बुद्धराजजी भणसाली, उदयपुर
श्री लक्ष्मीनारायणजी श्रीमाल, झूंझनू
श्री पानमलजी चोरडिया, नागपुर
श्री मोतीलालजी भूरा, जबलपुर
श्री नथमलजी सुराना, हिंगनघाट
श्री घेवरचंदजी चौपडा, मुंगेली
श्री अमरचंदजी कालूरामजी बोथरा, राजीम
श्री हस्तीमलजी पारख, धमतरी
श्री सौभाग्यमलजी संखलेचा, आर्वी
श्री बालाभाई चकलदास, अमदाबाद
श्री चंदुलाल मोहनलाल कोठारी, अमदाबाद
श्री कांतिलाल मगनलाल, अमदाबाद
श्री फकीरचंद बालाभाई, अमदाबाद
श्री सेठ कल्याणचंद घेलाभाई, सूरत
श्री मूलचंदजी पारख, बडौदा
श्री रतनजी दयाल, प्रभासपाटन
श्री रामचंद लाधा, वेरावल
श्री गोपालजी पुरूषोतम शाह, मांडवी
श्री हेमचंद सांकलचंद शाह, भुज
श्री मूलचंद तलकशी शाह, अंजार
श्री दामजी सांकलचंद शाह, मुन्द्रा

क्रमशः

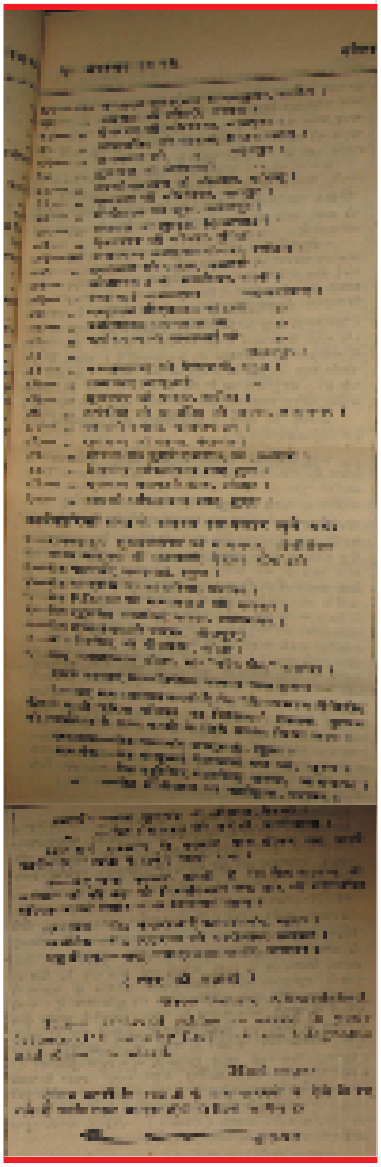

देश भक्त संत : आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरि

मुनि विरक्तप्रभसागरजीम.

मैं आज उस महापुरूष के जीवन पर लिखने जा रहा हूँ जिनका जीवन अपने आप में अनूठा, अद्वितीय और अनुपमेय था। पूज्यश्री का जन्म थली प्रान्त के रतनगढ गॉव में माघ वदि एकादशी को हुआ। थली प्रान्त में तेरापंथ सम्प्रंदाय का अधिक विचरण होने से मंदिर-मार्गी साधुओं का विचरण कम हो गया था।

मुक्तिमलजी सिंघी के पूर्वजों द्वारा जिनमंदिर का निर्माण कराया गया था। तेजकरण की बुद्धि, विनय, विवेक ने संतों के हृदय में जैसे स्थान पा लिया। जीवन के पड़ाव ने तेजकरण को न जाने किस मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया। उनकी माँ का आकस्मिक निधन हो गया। इस घटना से तेजकरण के मन में वैराग्य का पौधा अंकुरित हुआ और उन्होंने अपने पिताजी के साथ सिर्फ 9 वर्ष की उम्र में वि.सं. 1977 चैत्र शुक्ला नवमी को बीदासर ग्राम में तेरापंथ संघ के आचार्य श्री कालूगणि के पास प्रव्रज्या ग्रहण करके अध्ययनरत हो गये।

तेरापंथ परंपरा के सिद्धान्त मूर्तिपूजा, दया और दान के विरोध में थे। जब पूज्यश्री ने राजप्रश्नीय, जीवाभिगम, भगवती, ज्ञाता धर्मकथा सूत्र आदि आगमों को पढ़कर मनन, चिंतन किया तो उन्हें अपनी प्ररूपणा गलत महसूस हुई।

साधु वेष का त्याग किये बिना ही पूज्यश्री सच्चे गुरू की तलाश में चल पड़े और दो वर्षों के उपरांत उन्हें खरतरगच्छाचार्य श्री जिनहरिसागरसूरिजी म.सा. की निश्रा प्राप्त हुई। अनूपशहर (यू.पी.) में वि.सं. 1989 ज्येष्ठ शुक्ला त्रयोदशी की शुभ घड़ी में आचार्यश्री का शिष्यत्व प्राप्त करके 'मुनि कान्तिसागर' नाम प्राप्त किया और संस्कृत, न्याय आदि में अपनी विद्वत्ता प्रकट करने के साथ-साथ विनय आदि गुणों में भी अभिवृद्धि की।

पूज्यश्री की योग्यता ध्यान में रखते हुए आपको आपके गुरूदेव ने अनुयोगाचार्य पद प्रदान किया।

पूज्यश्री क्रातिंकारी संत के रूप में भी जाने जाते थे। वे जितने कठोर थे, उतने ही कोमल भी थे। उनके हृदय में अनुपम गुरूभक्ति एवं निष्ठा थी। गुरूभक्ति और गुरूनिष्ठा इतिहास के उनके पृष्ठों को पढ़ने के लिए जैसे आतुर कर देती है।

पूज्यश्री देश प्रेमी संत थे। भारत और पाकिस्तान के युद्ध में शहीद हुए सैनिकों के परिवार को आर्थिक सहयोग की जरूरत थी, उस समय राजस्थान के मुख्यमंत्री मोहनलालजी सुखाडिया जो पूज्यश्री की आचार निष्ठा एवं देश प्रेम से प्रभावित थे, ने पूज्यश्री को प्रयोजन बताया। उस समय पूज्यश्री ने ऐसी सिंह गर्जना की कि प्रवचन में उपस्थित लोगों ने धारण किये हुए मूल्यवान् आभूषण देश के लिये समर्पित कर दिये। कुछ ही समय में लाखों की राशि एकत्र हो गयी, यह पूज्यश्री का ही प्रभाव था।

उनके जीवन के बारे में जितना लिखे उतना कम है। मांडवला में अपने सुयोग्य पट्टधर शिष्य को हित शिक्षा देते हुए मिगसर वदि सप्तमी को स्वर्गवासी हो गये। अग्नि संस्कार के समय उनका हाथ आग की लपटों मे से बाहर आकर आर्शीवाद की मुद्रा में लहराया, उस अनुपम दृश्य को हजारों लोगों ने कैमरे में कैद कर दिया। पूज्यश्री की पावन पुण्यतिथि पर मैं अपने हृदय के पुष्पों से उन्हें श्रद्धांजली समर्पित करता हुआ यह कामना करता हूँ कि उनका आशीर्वाद मुझ पर सदैव बरसता रहे।

बाड़मेर नगर में एतिहासिक चातुर्मास

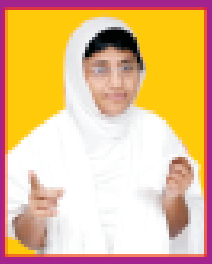
प. पू. सौम्यगुणा श्री जी म.सा.

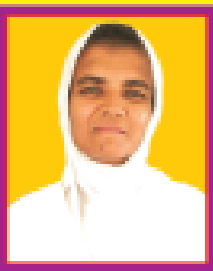
प. पू. स्थितप्रज्ञाश्री जी म.सा.

प. पू. संवेगप्रज्ञाश्री जी म.सा.

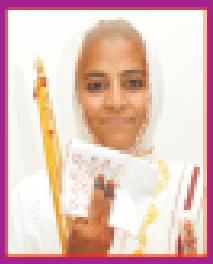
प. पू. श्रमणीप्रज्ञा श्री जी म.सा.

प . पू. सौम्यगुणा श्री जी म.सा. (D.lit)

प. पू. स्थितप्रज्ञाश्री जी म.सा. (Ph.D)

प. पू. संवेगप्रज्ञाश्री जी म.सा. (Ph.D)

प. पू. श्रमणीप्रज्ञा श्री जी म.सा.

के बाड़मेर चतुर्मास पर कोटि-कोटि वंदन

एवं

शांतिलाल डामरचन्द छाजेड़ परिवार

की ओर से

दिपावली के पावन पर्व की
हार्दिक शुभकामनाएं

सम्पूर्ण चातुर्मास के
लाभार्थी परिवार

डामरचन्दजी, चतुर्भुजजी, शांतिलालजी, नीरजकुमार

बेटा-पोता धनराजाणी परिवार,

हस्साणी वाले, बाड़मेर हाल-मालेगांव

मधुर संस्मरण

मेरी अनुभूति

साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

पुण्योदय से मुझे बचपन में ही संयम की आराधना का अवसर मिला। परमात्मा महावीर का वेश प्राप्त करना और उसमें रमणता आना दोनों अलग-अलग है। परमात्मा ने इन्हीं महाव्रतों को पाकर केवल ज्ञान की भूमिका का स्पर्श कर लिया था। क्या इन्हीं महाव्रतों की आराधना करके मैं अपनी चेतना को कषायमुक्त नहीं बना सकती?

ऐसा नहीं कि इन कषायों के दुष्परिणामों से मैं अज्ञात हूँ। मैं अच्छी तरह समझती हूँ कि ये कषाय दूसरों को बाद में पीड़ा देते हैं, स्वयं को पहले। इन विभावों ने आत्मा को संसार में सदैव भटकाया है... आग में जलाया है, फिर भी वक्त आया... हल्की सी प्रतिकूलता आयी कि चेतना कषायों से आक्रांत हो जाती है। कभी-कभी लगता है कि मैं यह दावा जरूर करती हूँ कि ''आणाए धम्मो'' परमात्मा की आज्ञा में जीना ही मेरा धर्म है। परंतु क्या परमात्मा की आज्ञा मेरा जीवन मंत्र बना?अभी तो यह कहा जा सकता है कि मन की कामना पूर्ति ही मेरा जीवन है।

मैं कल्याण मासिक पत्रिका देख रही थी। अचानक मेरी नजर पड़ी उसमें लगे मोतीशा शेठ के फोटो पर। मोतीशा का नाम मेरी संवेदनाओं से जुड़ा नाम है। वर्षों पूर्व मैंने बाऊसा श्री हरखचंदजी नाहटा की प्रेरणा से उनके गोत्रीय पूर्वज श्री मोतीशा के जीवन को उपन्यास की शैली में लिखा था!

आज भी मोतीशा की ओजस्विता, तेजस्विता से युक्त पुण्यपुंज जीवन मुझे प्रेरणा देता है। पाँच दशक में सिमटा उनका जीवन इतिहास का अनमोल दस्तावेज है। अपने छोटे जीवन में उन्होंने जिनशासन एवं जीवदया के जो कार्य किये, वो आज भी जैसे मील के पत्थर के रूप में अनमोल है।

उस चित्र के साथ उनके जीवन की एक घटना अंकित थी। मैंने जब उस घटना को पढा तो मैं अनुमोदना से भर उठी। मेरे रोम रोम में उनके प्रति अनुमोदना के भाव भर गये! मन जैसे चमत्कृत हो उठा!

मोतीशा सेठ की घटना कोई बहुत प्राचीन नहीं हैं। 19 वीं शताब्दी का यह इतिहास है।

एक बार भायखला मंदिर-दादावाडी के दर्शन वंदन पूजन करके वे अपनी दुकान पर जा रहे थे। अनेक लोग नमन-अभिवादन की मुद्रा में सड़क के दोनों ओर खडे थे। सेठ मोतीशा भी जनता का अभिवादन स्वीकार करते हुए आगे बढते जा रहे थे।

मोतीशा सेठ ने अनूठे एवं विशिष्ट आचरण से अपना एक ऐसा विशिष्ट व्यक्तित्व निर्मित किया था कि जिस सड़क से उनकी घोड़ागाडी पसार होती... दुकान अथवा कहीं भी बैठा हर व्यक्ति सम्मान में खड़ा हो जाता था।

अचानक उनकी नजर एक दृश्य पर अटक गयी! उन्होंने देखा- एक व्यक्ति एक गाय को अत्यंत बेदर्दी से घसीटता हुआ ले जा रहा है। सेठ की अनुभवी आँखें सहम गयी- यह गाय कसाईखाने की ओर ले जायी जा रही है। उन्हें लगा- जैसे गाय उनकी ओर बडी कातर निगाहों से देखते हुए कह रही है- तुम मां का दूध कुछ समय पीते हो पर पूरी जिन्दगी उसे सम्मान के साथ संभालते हो। आजीवन हमारा दूध पीकर भी तुम

हमें कसाई के हाथों बेचते हुए जरा भी नहीं कांपते?

हम तुमसे या तुम्हारी संपूर्ण जाति से कुछ नहीं मांगते। कम से कम हमें स्वतंत्रता के साथ अपनी जिदंगी तो जीने दो। सताना या दु:खी करना ही तुम्हारे विकसित होने की पहचान है क्या?मानव होने की सार्थकता तो दूसरों को सुखी करने में है।

मोतीशा को लगा- गाय की उन आँखों में मौत की भयावनी छाया तो उतरी हुई है ही पर साथ ही बचाव की पुकार भी है। वे उन आँखों को अनदेखा न कर सके। उनका कोमल हृदय गाय के मौत की कल्पना से ही व्यथित हो उठा। उन्होंने साथ चल रहे अपने कर्मचारी को कहा- तुम जाकर उस कसाई के हाथ से गाय को मुक्त कराओ!

आज्ञापालन करते हुए कर्मचारी ने जाकर उस कसाई से कहा- यह गाय तुम मुझे दे दो और बदले में तुम जो चाहो, मुझसे दाम ले लो। मेरे सेठजी इस गाय की मुक्ति चाहते हैं।

कसाई ने इन्कार कर दिया। कर्मचारी ने भरपूर निवेदन किया पर कसाई गाय नहीं देने पर अड गया। आखिर वह कर्मचारी गाय की डोरी कसाई के हाथों से छीनने के लिये मजबूर हो गया। दोनों के बीच कुछ देर छिना-झपटी चली और उसी रस्साकसी में अचानक उस कर्मचारी के द्वारा उस कसाई के किसी मर्मस्थल पर चोट लग गयी और वहीं उसकी मृत्यु हो गयी।

छोटी सी इस घटना ने विकराल रूप धारण कर लिया। मामला कोर्ट तक जा पहुँचा। दोनों ओर से वकीलों द्वारा पक्ष एवं विपक्ष में दलीलें प्रस्तुत हुई और आखिर जज द्वारा निर्णय सुनाया गया कि कर्मचारी को फांसी होनी चाहिये! सेठ मोतीशा फैसले के समय उपस्थित थे। उन्होंने कोर्ट की अनुमति लेकर पूर्ण वीरता के साथ निवेदन किया- हजूर! यह कर्मचारी तो मात्र चिट्ठी का चाकर है। अगर इस कार्यवाही में आप किसी को अपराधी मानते हो तो असली सजा का पात्र मैं हूँ। इसने जो किया, मेरे आदेश से किया है।

कोर्ट में सन्नाटा पसर गया। चारों ओर हवा में मात्र उपस्थित जनता की सांसों की ही आवाजें आ रही थी! जैन समाज के साथ ही अन्य समाज की भी बड़ी संख्या में उपस्थिति थी। ज्योंहि जज का निर्णय जनता तक पहुँचा था, जनता में निस्तब्धता व्याप्त हो गयी थी और सेठ मोतीशा ने दृढता के साथ जब स्वयं को अपने कर्मचारी के स्थान पर प्रस्तुत किया तो जनता कलेजा थामकर खड़ी रह गयी। 'अब क्या होगा?' का प्रश्न चारों ओर हवा में तैरने लगा!

फांसी की सजा में परिवर्तन की कोई संभावना न थी। अपराध की स्वीकारोक्ति पर कोर्ट ने पात्रों में परिवर्तन करते हुए कर्मचारी के स्थान पर सेठ मोतीशा के लिये फांसी की घोषणा कर दी।

कर्मचारी ने रोते हुए सेठ के पाँव पकडकर विनंती की- हजूर! आपका जीवन देश के लिये, मानवता के लिये एवं पशु-पक्षी जगत के लिये अनमोल है। आप लाखों के तारणहार हैं। आपके जीवन से संघ और शासन के बहुत कल्याण की अपेक्षा है। मुझे आप एक अवसर दो। मेरे लिये इससे बड़ा और कोई सौभाग्य नहीं हो सकता कि मैं आपके लिये उपयोगी बनूं! वह कर्मचारी प्रार्थना करता रहा, पर सेठ ने स्वीकृति न दी!

सेठ मोतीशा से अंतिम इच्छा पूछी गयी!

प्रभु भक्ति में ओतप्रोत हृदय... जिनशासन को समर्पित प्राण... तुरंत कहा- मैं अंतिम समय में भायखला स्थित परमात्मा आदिनाथ की पूजा-भक्ति करना चाहता हूँ। कोर्ट ने स्वीकार किया। मोतीशा अष्टप्रकारी पूजन की सामग्री के साथ मंदिर में पहुँचे।

ज्योंहि परमात्मा को देखा- सारी स्थिति विस्तृत हो गयी! मौत की भयावह कल्पनाएँ तिरोहित हो गयी। फांसी का फंदा गायब हो गया! अब शेष रहा मात्र आत्मा का परमात्मा से मिलन! परमात्मा की भक्ति में लीन होकर स्तुति करते रहे और प्रभु मिलन की प्यास बुझाते रहे!

अंतिम पूजा के साथ अंतिम आराधना करके सेठ मंदिर से बाहर पधारे! निश्चित स्थान पर पहुँचे। संपूर्ण मुंबई में घटना की चर्चा थी! स्वामी भक्ति तो आज तक बहुत बार जानी थी पर आज जीवन में पहली बार स्वामी-धर्म के निर्वाह की घटना सुन रहे थे!

अहिंसा-धर्म के लिये जीवन का बलिदान... वह भी किसी सामान्य व्यक्ति द्वारा नहीं बल्कि उस समय के विशिष्ट धनाढ्य एवं शासन समर्पित व्यक्ति द्वारा... जिसने भी सुना कांपकर रह गया! उस समय फांसी मुंबादेवी के चौक में दी जाती थी। आज तक जब भी किसी को फांसी दी जाती थी लोग कौतुक देखने उमड़ते थे पर आज अंतर था! उमडे तो आज भी थे पर आज सभी के चेहरे उदास थे... आँखें रो रही थी और हृदय जैसे धड़कना बंद हो गया था! आज तक अपराधी को सजा पाते देखा था पर आज जीवदया के लिये प्राण की बलि देते एक महामानव को देख रहे थे।

सेठ मोतीशा ने भरपूर नजर उपस्थित जनमेदिनी पर डाली! स्नेहिल आँखों के साथ सभी का अभिवादन एवं क्षमा-याचना की! नवकार महामंत्र, दादा आदिनाथ एवं अपने परम आराध्य दादा गुरूदेव जिनदत्त कुशल गुरूदेव का स्मरण करते हुए वे स्वयं चलते हुए फांसी के फंदे पर चढ गये!

जल्लाद तैयार था। उसने सेठ के गले में रस्सा बांधा और एक ही झटके से खिंच दिया! फंदा तंग (टाईट) नहीं हुआ। जब जल्लाद ने बहुत अधिक जोर लगाया तो ड़ोरी ही टूट गयी!

जल्लाद ने दूसरी और तीसरी बार प्रयत्न किया पर सफलता नहीं मिली!

जनता में आनंद और प्रसन्नता का वातावरण छा गया! अंग्रेज अधिकारी यद्यपि चमत्कार आदि के प्रति मान्यता नहीं रखते थे, पर आँखों देखी स्थिति से इन्कार भी तो नहीं कर सकते थे। सेठ को कानूनन नीचे उतारना पड़ा।

अभी तक मोतीशाह के प्रति जनता में उनकी मानवता और करूणा के कारण मान सम्मान था पर इस घटना ने चारों ओर एक संदेश भेज दिया- मोतीशा पर शासनदेव की अपूर्व कृपा है।

उस समय भारत पर अंग्रेजों का अधिकार था! अंग्रेज सत्ता को भी इस घटना ने जैसे चमत्कृत कर दिया। वे तुरंत आये और अपने आचरण की क्षमा मांगते हुए उन्होंने मोतीशा से निवेदन किया- हम आपकी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये कृत-संकल्प है। आप हमें आदेश देकर अनुग्रहित करें।

मोतीशा सेठ तो जैसे इसी ताक में थे! उन्होंने कहा- मेरी पसंद जिनाज्ञा का पालन है। परमात्मा की शाश्वत वाणी है- अहिंसा ही धर्म है। जीवदया से महान् और कोई अनुष्ठान नहीं होता। मेरा निवेदन है कि अगर किसी को फांसी की सजा दी जा रही हो और उस समय अगर मेरी नजर उस व्यक्ति को देख ले तो उसे सजा से मुक्ति मिलनी चाहिये।

अंग्रेज तो सेठ मोतीशा की इस धर्मदृढता को देखकर जैसे अचंभित हो गये। सेठ ने पाने के इस सुनहरे अवसर पर भी अपने लिये कुछ न मांगकर मात्र जीवदया के लिये मांगा था! तुरंत मोतीशा की मांग मान ली गयी!

समय आगे बढता रहा। कईयों ने सेठ की करूणा से जीवनदान प्राप्त किया। धीरे धीरे सत्ता को लगा कि इससे बडे-बडे अपराधी भी सजा-मुक्त हो रहे है।

सेठ के प्रति भी उनमें गहरी निष्ठा थी, अत: उनको दिया हुआ वचन तोड़ना भी नहीं चाहते थे और अपराधी को मुक्त करना भी गवारा नहीं था! उन्होंने गंभीरता से इस मुद्दे पर चिंतन करते हुए निर्णय लिया कि फांसी का स्थान ही बदल देना चाहिये। अपने निर्णय की क्रियान्विति करते हुए उन्होंने फांसी का स्थान बदल दिया पर मोतीशा के प्रति अपनी निष्ठा बरकरार रखी।

यह इतिवृत्त पढ मैं अनुमोदना से भर गयी। एक गाय की सुरक्षा के लिये मोतीशा जैसे सत्ता-संपन्न व्यक्ति ने अपनी जान को खतरे में डाल दिया! यह जिनशासन ऐसे अनमोल और अनूठे समर्पित भक्तों की नींव पर ही गतिशील है।

प्रभु आज्ञा के प्रति ऐसी समर्पित चेतना मेरी भी बने...। मेरा मन मोतीशा की भक्ति में डूबी चेतना को जैसे निवेदन करना चाहता है- आप जहाँ भी हो, आराधना में तन्मय बनाने में सहयोगी बनना...।

श्री शांतिन
दादा गुरूदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी-जि
पू. गणनायक श्री सुख

कर्नाटक के श्री बल्लारी नगर की पावन धरा पर

वैराग्यवती सुश्री शिल्पा बालर

की भागवती प्रव्रज्या प्रसंगे

सादर सस्नेह आत्मीय अनुभूति के साथ

दिव्या कृपावृष्टि

पूज्य आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरिजी म.

पूज्या प्रवर्तिनी श्री प्रेमश्रीजी म., पूज्या श्री तेजश्रीजी म.

पावन निश्रा

पूज्य गुरूदेव आचार्य भगवंत

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

के शिष्य पूज्य गुरूदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

आदि ठाणा

अमीवर्षा

पूज्या गणरत्ना पार्श्वमणि

तीर्थ प्रेरिका

श्री सुलोचनाश्रीजी म.,

तपोरत्ना श्री सुलक्षणाश्रीजी म.

पंचाह्नि
व
दं

सानिध्य

पूज्या साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म., पूज्या साध्वी डॉ. श्री प्रियलताश्रीजी म.,
पूज्या साध्वी डॉ. श्री प्रियवंदनाश्रीजी म., पूज्या साध्वी डॉ. श्री प्रियश्रांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा

आयोजक

शा. मीठालाल- सौ. पुष्पादेवी,

महावीर-उषा, रमेश-चंचल, गौरव, लक्षित,

कु. भाविका, कु. पहल समस्त बालर परिवार

मरूधर में गढ सिवाणा- हाल बल्लारी (कर्नाटक)

फोन- 08392 273535, मो. नं. : 94496 44150 (M), 94498 34113 (R)

ाथाय नमः
नकुशल-जिनचन्द्रसूरि सद्गुरूभ्यो नमः
सागरसद्गुरूभ्यो नमः

आमंत्रण

का महोत्सव प्रारंभ- दि. 11.12.2014

र्षीदान वरघोडा- दि. 14.12.2014

ीक्षा महोत्सव- दि. 15.12.2014

स्वागतोत्सुक
सौ. सुमन-दिनेशजी बागरेचा
सौ. भावना-महेन्द्रजी पालरेचा
निकित, साक्षी, मुस्कान, महेक

संघ, साधक की साधना स्थली है। एक तरह से संघ गुण, गुणवान् और गुणानुरागी का त्रिवेणी संगम है। शास्त्रों में संघ के अर्थ को अभिव्यक्त करते हुए कहा गया **'गुण समुदायो संघो।'** सम्यग्ज्ञान-दर्शन-चारित्र आदि गुणों का समूह संघ कहलाता है।

संघ वह वटवृक्ष है, जिसकी निर्मल-शीतल छाया में जीव गुणों का उपार्जन करता है और आत्म-विकास के सोपानों पर आरोहण करता हुआ परम सुख में स्थित होता है।

卐 संघ का अर्थ- मूर्धन्य आचार्य श्री हरिभद्रसूरि महाराज ने पंचाशक प्रकरण में संघ, प्रवचन और तीर्थ, इन तीनों को समानार्थी शब्द कहा है।

1. साधना की वह पवित्र स्थली, जहाँ साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका एकबद्ध होकर आत्म-आराधना हेतु प्रयत्नशील बनते है, उसे संघ कहते है।
2. ऐसे प्रकृष्ट-प्रशस्त वचन, जो जिनेन्द्रों के द्वारा उपदिष्ट हैं, उन्हें प्रवचन कहा जाता है और प्रवचन का अर्थ द्वादशांगी होता है।
3. जिस उपाय से जीव संसार-सागर को पार करता है अथवा भव-समुद्र से उत्तीर्ण होता है, उसे तीर्थ कहते है। द्वादशांगी का आधार संघ है। संघ के अभाव में द्वादशांगी का अस्तित्व नहीं हो सकता क्योंकि तीर्थंकर स्वयं संघ में से ही होते हैं, ऐसा शास्त्रकारों का कथन है।

卐 संघ का स्वरूप- संघ का अर्थ होता है- जिनाज्ञा एवं मर्यादा-पूर्वक एक समूह का साधना हेतु कटिबद्ध होने का स्थान। मनुष्य वह कहलाता है, जिसमें मनुष्यत्व से संबद्ध परोपकार, विवेक आदि गुण होते हैं, उसी प्रकार संघ वह कहलाता है, जिसमें जिनाज्ञा, श्रद्धा, सदाचार आदि गुणों से सम्पन्न व्यक्तियों का समूह होता है।

मर्यादाहीन व्यक्तियों के समुदाय को **'अत्थिसंघाओ'** अस्थियों के समूह की संज्ञा दी गयी है। यद्यपि परमात्मा महावीर ने एकाकी एवं संघबद्ध, दो प्रकार की साधना की व्यवस्था दी है। एकाकी साधक को भी जीवन के अन्तिम काल में संघ की ही शरण स्वीकार करनी होती है। सिंदुरप्रकर में भी कहा हैं- **'गुण संघ कोलिसदनम्'** संघ वह है, जो गुण समुदाय का क्रीड़ाघर है।

卐 शास्त्रों में संघ की महत्ता-

व्यवहार भाष्य की गाथा 1681 में संघ का महिमा-संगान करते हुए कहा गया है-

आसासो विसाओ,
सीतघर समो य होति मा भाहि।
अम्मापित्ती समाणो,
संघो सरणं तु सव्वेसिं।।

'संघ आश्वास, विश्वास और शीतघर के तुल्य है, संघ माता-पिता के समान संरक्षक है, संघ समस्त जीवों के लिये शरण रूप है, अतः भयभीत न बनो। इसी प्रकार नंदी सूत्र में भी संघ को विविध उपमाओं से अभिमण्डित किया गया है-

गुणभवण-गहण सुयरयण भरिय,
दंसण विसुद्ध-रत्थागा।
संघणगर! भद्दं ते अखंड-चरित्त पागारा।।

-जो मूल और उत्तर गुणों से परिपूर्ण है।

-जो श्रुत रूपी रत्नों से युक्त है।

-जो विशुद्ध दर्शन रूप पथों से संकुल है।

-जो अखण्ड चारित्र रूप प्राचीर से परिवृत्त है।

संघ के महत्त्व एवं स्वरूप पर विशेष आलेख

संघो सरणं तु सव्वेसिं

मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.

उस संघ रूप नगर का कुशल-मंगल हो।

卐 पच्चीसवाँ तीर्थंकर है संघ- जिस प्रकार ताप में तपते व्यक्ति को वृक्ष की छत्र-छाया आनंद प्रदान करती है, उसी प्रकार जन्म-मरण रूप दु:ख से संतप्त, क्लांत और म्लान आत्मा को संघ रूपी कल्पतरू परमानंद प्रदान करता है।

श्रमण प्रधान चतुर्विध संघ को तीर्थंकरों ने पच्चीसवाँ तीर्थंकर कहा है। इस संघ की महिमा तो देखो कि जिस चतुर्विध संघ का प्रवर्तन स्वयं तीर्थपति करते हैं, उसी कल्याणकारी संघ को देशना से पूर्व नमस्कार करते हुए वे कहते हैं- **'नमो तित्थस्स।'**

आवश्यक निर्युक्ति में कहा गया-

तित्थपणामं काउं, कहेइ साहारणेण सद्देणं।
सव्वेसिं सन्नीणं जोयणनीहारिणा भयवं॥

तीर्थंकर देव तीर्थ (संघ) को प्रणाम करके एक योजनगामिनी एवं समस्त प्राणियों को अपनी अपनी भाषा में समझ में आ सके, ऐसी महोपकारिणी भाषा में देशना देते हैं।

卐 तीर्थंकर तीर्थ को वंदन क्यों करें?

'तीर्थंकर परमात्मा कृतकृत्य होने पर भी संघ को नमस्कार क्यों करते हैं?इस प्रश्न का समाधान करते हुए आवश्यक निर्युक्तिकार श्री भद्रबाहु स्वामी तीन कारण प्रस्तुत करते हैं,

तप्पुव्विया अरहया,
पूइयपूया व विणयकम्मं च।
कयकिच्चोऽपि जह,
कह कहेइ नमए तहा तित्थं॥

1. तीर्थंकरों का तीर्थंकरत्व संघपूर्वक है। अर्थात् तीर्थंकर नामकर्म के उपार्जन में संघ कारणभूत है। कोई भी जीव संघ आलम्बन के बिना न तीर्थंकर बना है, न भविष्य में बन सकेगा। इस प्रकार संघ, तीर्थंकर का उपकारी है।
2. 'विनय धर्म का मूल है' जीवों को इस तत्त्व का बोध देने के लिये तीर्थपति संघ को नमन एवं वंदन करते हैं।
3. विनय करने से कृतज्ञता-धर्म का परिपालन होता है।

卐 संघ पूजन का फल-

श्री संघ का विनय, बहुमान आदि करने से समस्त पूज्यों की पूजा हो जाती है क्योंकि इसके अतिरिक्त गुणवान समुदाय दूसरा नहीं है।

पंचाशक प्रकरण में श्री हरिभद्रसूरि संघ की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं- स्वजन, परिजन आदि का पक्षपात किये बिना गुण-रत्नाकर रूप श्रीसंघ की पूजा करना निकट मोक्षगामी जीव का लक्षण है।

शास्त्रों में कहा भी गया है-

1. संघ पूजा ही महापूजा है।
2. संघ पूजा परमार्थ से भाव यज्ञ है।
3. संघ पूजन गृहस्थ धर्म का सार है।
4. संपत्ति का मूल संघ-पूजन है।

संघ पूजा के दो फल कहे गये हैं- मुख्य फल मोक्ष की प्राप्ति है तथा आनुषंगिक फल देव एवं मनुष्य लोक के सुखों की प्राप्ति है।

卐 किस संघ की पूजा करें?

यहाँ संघ का अर्थ मात्र समुदाय नहीं है अपितु जिनाज्ञा निष्ठ समुदाय से है। इसी अर्थ को सोमप्रभाचार्य सिन्दूर प्रकर में व्यक्त करते हैं-

यः संसारनिरासलालसमतिर्मुक्त्यर्थमुत्तिष्ठते।
यं तीर्थं कथयति पावनतया येनास्ति नान्यः समः।
यस्मै तीर्थपतिर्नमस्यति सतां यस्माच्छुभं जायते,
स्फूर्तिर्यस्य परा वसन्ति च गुण य संघोऽर्च्यताम्॥

उस संघ की पूजा-भक्ति करो-

-जिस संघ की बुद्धि संसार के जंजाल को हटाने की भावना रखती है...

-पवित्रता के कारण जिसे तीर्थ कहा जाता है...

-जिसके समान दूसरा कोई पदार्थ नहीं...

-जिसे तीर्थंकर भी नमस्कार करते हैं...

-जिससे सज्जनों को शुभता की प्राप्ति होती है...

-जिसमें अपूर्व स्फूर्ति है...

-जो अनेक गुणों का आवास स्थल है।

卐 संघ-पूजा का अर्थ-

द्रव्य (वस्तु) की प्रभावना करना गौण संघ पूजन है।

मुख्यत: संघ के गुणवानों की प्रशंसा, बहुमान, विनय करना तथा धर्म में अस्थिर जीवों को स्थिर करना संघ पूजन है।

पूर्वाचार्य श्री रत्नप्रभसूरि, नवांगी टीकाकार अभयदेवसूरि, दादा श्री जिनदत्तसूरि, जिनकुशलसूरि आदि ने हजारों-लाखों परिवारों को जैन बनाकर संघ की महापूजा की। संघ की पूजा और प्रभावना के लिये जरूरी है कि संघ के हर व्यक्ति का आचरण अन्य के लिये मुक्ति-प्रेरक तथा सम्यक्त्व-प्रदायक बने।

अनुचित, मर्यादाहीन, जिनाज्ञाविरूद्ध आचरण से लोक में धर्म की अवहेलना एवं अपभ्राजना होती है, अत: संघ के हर सदस्य का यह संकल्प होना चाहिये कि मैं अपने आचार-विचार द्वारा संघ की गरिमा में चार चाँद न लगा सकू तो कोई परवाह नहीं परन्तु मैं अपनी किसी भी प्रवृत्ति से संघ की गरिमा को कम होने नहीं दूगा।

卐 संघ की अवहेलना मत करो-

आवश्यक निर्युक्ति में कहा गया है-

जो अवमन्नइ संघ पावो,
थोवं वि माणमयलित्तो।
सो अप्पाणं बोलइ, दुक्खमहासागरे भीमे।

जो पापी मनुष्य मान, मद आदि में लिप्त होकर श्रीसंघ का तनिक भी अनादर करता है, वह अपनी आत्मा को भयंकर दु:ख के समुद्र में डूबाता है।

इससे आगे कहते हैं-

सिरिसमणसंघ आसायणाओ,
पाविंति जं दुहं जीवा।
तं साहिउं समत्थो जइ परिभयवं जणो होइ॥

श्रमण प्रधान श्री संघ की आशातना करने वाला विविध प्रकार के जिन कठोर दु:खों को प्राप्त करता है, उसे कहने में वही सक्षम हो सकता है, जो संपूर्ण ज्ञानी (केवलज्ञानी) हो। वाचक उमास्वाति तत्त्वार्थ सूत्र में कहते हैं कि जो व्यक्ति संघ आदि का अवर्णवाद करता है, वह दर्शन मोहनीय कर्म बांधकर दीर्घकाल पर्यन्त मिथ्यात्व के दल-दल में फंसता है, उसके लिये सम्यग्दर्शन का रत्न दुर्लभ-दुष्प्राप्य हो जाता है।

श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामी तथा विष्णुकुमार मुनि ने क्रमश: पूर्वों का ज्ञान देने के लिये तथा नमुचि राजा को शिक्षा देने के लिये आत्मसाधना को गौण किया, उसमें भी कारण श्रमणप्रधान चतुर्विध का आदेश-निर्देश ही था।

सिन्दुर प्रकरकार सम्मान संघ के लाभ इस प्रकार बताते हैं-

1. सज्जनों को शुभ की प्राप्ति होती है।
2. संसार से तिरने की लालसा उत्पन्न होती है।
3. लक्ष्मी स्वयं चलकर आती है।
4. कीर्ति का विस्तार होता है।
5. निस्वार्थ प्रेम तथा अपनत्व मिलता है।
6. सद्बुद्धि का विकास होता है।
7. मूल्यवान् मुक्ति की प्राप्ति होती है।

卐 संघ बने प्राणवान्-

परमात्मा महावीर के द्वारा प्रवर्तित तथा आचार्यों द्वारा संरक्षित संघ के प्राणतत्त्व अनुशासन, आचार और आस्था है।

हमें इस आदर्श संघ के गौरव को बढाने के लिये संकल्प करना होगा कि हम...

1. किसी भी साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका की निंदा, अवहेलना और तिरस्कार नहीं करेंगे। आवश्यक होने पर उनसे स्पष्टीकरण करेंगे।
2. ऐसा कोई भी आचार नहीं करेंगे, जिससे संघ का अपयश एवं पतन हो।
3. सांप्रदायिकता से दूर रहकर शुद्ध धर्म की उपासना करेंगे।
4. संघ में एकता, सहनशीलता और सौजन्यशीलता का विकास करेंगे।

प्रज्ञावन्त पूर्वाचार्यों ने जिस संघ की जडों को निष्ठापूर्वक आचार के अमृत सींचा, जिसके संपोषण, संवर्धन तथा संरक्षण में सम्पूर्ण जीवन एवं प्राण पूर्ण ऊर्जा समर्पित कर दी, उस कल्पवृक्ष रूपी इच्छितार्थ दानी संघ को सांप्रदायिक, प्रद्वेषी एवं विरोधी तत्त्वों से दूर रखते हुए यदि हम निजाचार से अक्षुण्ण एवं अक्षय रखने का प्रयत्न करें, तभी प्रगति के नये आयामों का संस्पर्श संभव हो सकता है।

शुभं भवतु श्री संघस्य।

क्या करते हैं हमेशा खुश रहने वाले

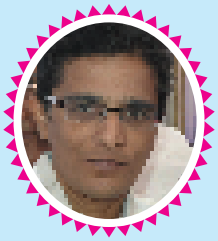

प्रस्तुति कैलाश बी. संकलेचा

जिंदगी में खुश कौन नहीं रहना चाहता! लेकिन कुछ लोग होते हैं जो हमेशा खुश रहते हैं।

आइए देखें ऐसा क्या करते हैं हमेशा खुश रहने वाले लोग–

खुश रहने वाले खुद पर अविश्वास नहीं करते।

खुश रहने वाले अजनबियों को भी नजरअंदाज नहीं करते।

खुश रहने वाले किसी को कुछ इसलिए नहीं देते कि उन्हें उनसे कुछ चाहिए।

खुश रहने वाले किसी को बदलने की कोशिश नहीं करते और जो जैसा है, उसे वैसा ही स्वीकार करते हैं।

खुश रहने वाले केवल दिमाग से ही नहीं, दिल से भी सोचते हैं।

खुश रहने वाले किसी भी बात को पर्सनली नहीं लेते।

खुश रहने वाले अपने भय पर काबू रखते हैं।

खुश रहने वाले किसी को माफी देने से मना नहीं करते।

खुश रहने वाले किसी विवाद को सुलझाने के लिए हाथापाई का सहारा नहीं लेते।

खुश रहने वाले कुछ ऐसा करने में भी असहजता महसूस नहीं करते, जो उन्हें पसंद न हो। अपने सपनों और इच्छाओं को नजरअंदाज नहीं करते।

खुश रहने वाले अपने भीतर की आवाज सुनते हैं। खुश रहने के लिए बाहर की तरफ नहीं देखते। खुद में ही खुशी ढूंढते हैं।

खुश रहने वाले किसी भी बदलाव को खुशी से स्वीकार करते हैं।

खुश रहने वाले, दूसरे उनके बारे में क्या सोचते हैं, इसे बहुत ज्यादा महत्व नहीं देते। किसी को लेकर जजमेंट नहीं होते। उनका लहजा कभी शिकायती नहीं होता।

खुश रहने वाले ऐसा कभी नहीं सोचते कि वे टूट चुके हैं।

खुश रहने वाले रिस्क लेने से नहीं घबराते।

खुश रहने वाले दूसरों को दोष नहीं देते और अपनी जिंदगी की पूरी जिम्मेदारी लेते हैं।

जहाज मंदिर को भेंट

विचक्षण विनेया महत्तरा पूज्या श्री विनीताश्रीजी म.सा.

के 75 वें संयम वर्ष अनुमोदनार्थ

श्री हिम्मतभाई पंकजभाई योगेशभाई कोठारी परिवार इन्दौर

की ओर से 1100 रूपये

तत्त्वावबोध

14

चतुर्भंगी का चमत्कार

मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.

पति-पत्नी-नरक-मोक्ष

1. पति-पत्नी, दोनों मोक्ष में-ऋषभदत्त और देवानंदा
2. पति मोक्ष में, पत्नी नरक में-हरिषेण चक्री और उसका स्त्री रत्न
3. पत्नी मोक्ष में, पति नरक में-श्रेणिक और नंदा रानी
4. पति-पत्नी, दोनों नरक में-ब्रह्मदत्त चक्री और उसका स्त्री रत्न

पति-पत्नी-देवलोक-नरक

1. पति-पत्नी, दोनों देवलोक में-सिद्धार्थ और त्रिशला
2. पति-पत्नी, दोनों नरक में-सुभूम चक्री और उसका स्त्री रत्न
3. पति देवलोक में, पत्नी नरक में-महाशतक और रेवती
4. पति नरक में, पत्नी देवलोक में-रावण और मंदोदरी

पति-पत्नी-देवलोक-मोक्ष

1. पति-पत्नी, दोनों देवलोक में-उदायन और प्रभावती
2. पति देवलोक में, पत्नी मोक्ष में-नाभि और मरुदेवी
3. पति मोक्ष में, पत्नी देवलोक में-राम और सीता
4. पति-पत्नी, दोनों मोक्ष में-जंबूस्वामी के माता-पिता (ऋषभदत्त और सुभद्रा)

भाई-बहिन-देवलोक-मोक्ष

1. भाई-बहिन, दोनों मोक्ष में-भरत और सुन्दरी
2. भाई-बहिन, दोनों देवलोक में-स्थूलिभद्र और यक्षा
3. भाई देवलोक में, बहिन मोक्ष में-करकण्डु मुनि और चन्दनबाला
4. भाई मोक्ष में, बहिन देवलोक में-प्रभु महावीर और सुदर्शना

भाई-नरक-मोक्ष

1. दोनों भाई मोक्ष में-भरत-बाहुबली, राम-भरत
2. दोनों भाई नरक में-दुर्योधन और दुर्शासन
3. बड़ा भाई मोक्ष में, छोटा भाई नरक में-पुण्डरीक और कण्डरीक
4. छोटा भाई मोक्ष में, बड़ा भाई नरक में-भरत और लक्ष्मण

भाई-देवलोक-मोक्ष

1. दोनों भाई, मोक्ष में-अरिष्टनेमि और रथनेमि
2. दोनों भाई देवलोक में-स्थूलिभद्र और श्रीयक
3. छोटा भाई देवलोक में, बड़ा भाई मोक्ष में-राम और शत्रुघ्न
4. छोटा भाई मोक्ष में, बड़ा भाई देवलोक में-प्रभु महावीर और नंदीवर्धन

भाई-नरक-देवलोक

1. दोनों भाई देवलोक में-अभयकुमार और मेघकुमार
2. दोनों भाई नरक में-दुर्योधन और दुर्शासन
3. बड़ा भाई नरक में, छोटा भाई देवलोक में-लक्ष्मण और शत्रुघ्न
4. बड़ा भाई देवलोक में, छोटा भाई नरक में-रावण और विभीषण

गुरु-शिष्य - मोक्ष-देवलोक

1. गुरु और शिष्य, दोनों मोक्ष में-परमात्मा महावीर और गौतम स्वामी
2. गुरु मोक्ष में, शिष्य देवलोक में-सुधर्मा स्वामी और जम्बूस्वामी
3. गुरु देवलोक में, शिष्य मोक्ष में-खंधक मुनि और उनके 500 शिष्य
4. गुरु-शिष्य, दोनों देवलोक में-सुधर्मा स्वामी और प्रभव स्वामी

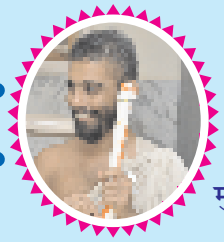

मुनि श्री मनितप्रभसागरजीम.

पंचांग

DEC. 2014

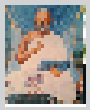

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	1 मिगसर सुदि 10	2 मिगसर सुदि 11	3 मिगसर सुदि 12	4 मिगसर सुदि 13	5 मिगसर सुदि 14	6 मिगसर सुदि 15
7 पौष वदि 1	8 पौष वदि 2	9 पौष वदि 3	10 पौष वदि 4	11 पौष वदि 5	12 पौष वदि 6	13 पौष वदि 7
14 पौष वदि 8	15 पौष वदि 8	16 पौष वदि 9	17 पौष वदि 10	18 पौष वदि 11	19 पौष वदि 12	20 पौष वदि 13
21 पौष वदि 14/30	22 पौष सुदि 1	23 पौष सुदि 2	24 पौष सुदि 3	25 पौष सुदि 4	26 पौष सुदि 5	27 पौष सुदि 6
28 पौष सुदि 7	29 पौष सुदि 8	30 पौष सुदि 9	31 पौष सुदि 10			

पर्व दिवस	05.12.2014 पाक्षिक प्रतिक्रमण	पौष वदि 8 की वृद्धि
	21.12.2014 पाक्षिक प्रतिक्रमण	पौष वदि 30 का क्षय
	06.12.14 रोहिणी आराधना	श्री पार्श्वनाथ तेला 16–17–18 दिसम्बर

श्री अरनाथ जन्म एवं मोक्ष कल्याणक	मिगसर सुदि 10	आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरि स्वर्गवास दिवस	पौष वदि 8(2006)
श्री अरनाथ दीक्षा कल्याणक	मिगसर सुदि 11	श्री पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक	पौष वदि 10
श्री मल्लिनाथ जन्म, दीक्षा निर्वाण कल्याणक	मिगसर सुदि 11	श्री पार्श्वनाथ दीक्षा कल्याणक	पौष वदि 11
श्री नमिनाथ केवलज्ञान कल्याणक	मिगसर सुदि 11	श्री चन्द्रप्रभ स्वामी जन्म कल्याणक	पौष वदि 12
आचार्य श्री जिनेश्वरसूरि द्वितीय जन्म दिवस	मिगसर सुदि 11(1245)	श्री चन्द्रप्रभ स्वामी दीक्षा कल्याणक	पौष वदि 13
मौन एकादशी आराधना	मिगसर सुदि 11	श्री शीतलनाथ केवलज्ञान कल्याणक	पौष वदि 14
आचार्य श्री जिनलब्धिसूरि जन्म दिवस	मिगसर सुदि 12(1360)	उपा. श्री क्षमाकल्याणजी स्वर्गवास दिवस	पौष वदि 14(1873)
श्री संभवनाथ जन्म कल्याणक	मिगसर सुदि 14	श्री विमलनाथ केवलज्ञान कल्याणक	पौष सुदि 6
श्री संभवनाथ दीक्षा कल्याणक	मिगसर सुदि 15	श्री शान्तिनाथ केवलज्ञान कल्याणक	पौष सुदि 9
आचार्य श्री जिनहंससूरि जन्म दिवस	मिगसर सुदि 15(1615)	श्री जिनआनंदसागरसूरि स्वर्गवास दिवस	पौष सुदि 10

इचलकरंजी समाचार

इचलकरंजी नगर में पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म. का चातुर्मास अत्यन्त भव्यता के साथ ऐतिहासिक रूप से संपन्न हो रहा है।

पूज्यश्री आगमों की वांचना फरमा रहे हैं। पर्युषण पूरे हो जाने पर भी आगम श्रवण करने के लिये लोग बडी संख्या में उपस्थित हो रहे हैं। ता. 30 सितम्बर से नवपद ओली की आराधना का प्रारंभ हुआ। ओलीजी का प्रवचन पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. ने अपनी विशिष्ट शैली में फरमाया। प्रतिदिन दोपहर में ढाई से साढे तीन बजे तक शिविर चलता है। ओलीजी की आराधना के मध्य ता. 7 अक्टूबर एवं 8 अक्टूबर को रात्रि में संस्कार लक्षी अनूठे नाटकों का आयोजन किया गया। ता. 7 को श्रीपाल मयणासुन्दरी का नाटक मंचित किया गया। ता. 8 को अमावस को चांद उगायो शीर्षक से दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि एवं चौथे दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि की घटनाओं का मंचन किया गया। ऐसे अद्भुत नाटक इचलकरंजी के इतिहास में प्रथम बार आयोजित हुए। इन नाटकों के समायोजन में पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. एवं पूजनीया साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म. का पूरा पुरूषार्थ रहा। नाटकों का दिग्दर्शन गुण्टुर निवासी श्री रमेशजी पोरवाल ने किया। श्रीसंघ द्वारा श्री रमेशजी का बहुमान किया गया।

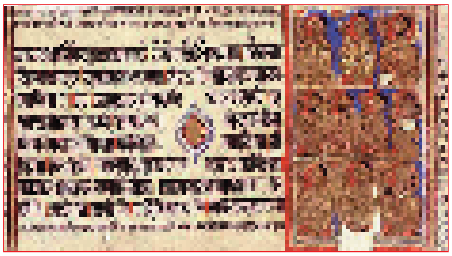

ता. 27 अक्टूबर को हुबली और बल्लारी में दीक्षा ग्रहण करने जा रही दीक्षार्थी बहिनों का मणिधारी संघ द्वारा अभिनंदन किया गया। शोभायात्रा निकाली गई।

छहरी पालित संघ का आयोजन

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म. की पावन निश्रा में इचलकरंजी से श्री कुंभोजगिरि तीर्थ के छह री पालित पद यात्रा संघ का आयोजन किया गया है।

इस चार दिवसीय संघ का आयोजन गढ़ सिवाना निवासी श्रीमती पिस्तादेवी छगनलालजी छाजेड परिवार द्वारा किया गया है।

कार्यक्रम के अनुसार छहरी पालित संघ से पहले त्रिदिवसीय जीवित महोत्सव का आयोजन किया गया है। जिसका प्रारंभ 6 नवम्बर 2014 कार्तिक पूर्णिमा से होगा। ता. 7 को श्री सिद्धचक्र महापूजन का आयोजन होगा। रात्रि में मातृ पितृ वंदना का भाव प्रवण समारोह होगा। ता. 8 को जीवित महोत्सव क्षमायाचना समारोह होगा।

त्रिदिवसीय महोत्सव के बाद ता. 9 नवम्बर को संघ का प्रस्थान होगा। ता. 10 को शिरोली तीर्थ की यात्रा कर ता. 11 को बडगांव पहुँचेगा। ता. 12 को संघ श्री कुंभोजगिरि तीर्थ पहुँचेगा। यात्रा के पश्चात् संघ माला का आयोजन होगा।

गुरुदेव की 29वीं पुण्यतिथि कुंभोजगिरि में

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की 29वीं पुण्यतिथि का आयोजन पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि मुनि मण्डल एवं पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में मिगसर वदि 7 ता. 13 नवम्बर 2014 को गुणानुवाद व पूजा के साथ मनाई जायेगी।

चातुर्मासिक तत्त्वज्ञान शिविर का आयोजन

पू. गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. के द्वारा सुंदर-सटीक रूप से तत्त्वज्ञान का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

प्रारंभ में जैन क्रिया, जैन भोजन, जैन विचार, जैन आचार आदि के स्वरूप विस्तार से समझाया गया।

पर्युषण के बाद शिविर जीव तत्त्व पर विस्तृत बोध दिया गया। जीव के 563 भेद, लोक-अलोक, 14 राजलोक, अढीद्वीप, प्रेक्टिकल रूप से प्रस्तुत किये गये। उसके बाद प्रथम कर्म विपाक कर्मग्रन्थ पर आधारित आठ कर्मों की विस्तृत विवेचना पूर्ण की गयी।

इस दौरान दो बार परीक्षाओं का आयोजन हुआ जिनमें पहली परीक्षा में श्वेता ललवाणी, प्रेमलता ललवाणी और रमेश छाजेड ने प्रथम तीन क्रमांक प्राप्त किये। दूसरी परीक्षा में प्रथम तीन स्थान रमेश छाजेड, प्रेमलता ललवाणी और पायल मेहता ने प्राप्त किये। वन मिनिट, स्तवन प्रतियोगिता आदि का भी आयोजन हुआ।

पू. साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म. द्वारा संकलित प्रश्न पत्र में प्रथम तीन स्थान श्रद्धा लूंकड, रमेश छाजेड और प्रेमलता ललवाणी ने प्राप्त किये। मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. द्वारा विवेचित प्रत्याख्यान भाष्य पुस्तक पर खुली किताब परीक्षा चल रही है । अन्तिम तारीख 31 जनवरी 2015 है। (संपर्क सूत्र : 98503-16237, 94232-84725)

प्रति रविवारीय बाल संस्कार शिविर का संचालन पू. साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म. ने किया। उन्होंने नवकार, चौबीस तीर्थंकर, विनय, विवेक आदि विषयों सुन्दर प्रशिक्षण दिया! उन्होंने बालोपयोगी 'सुवास वाटिका' पर क्लासेज ली। उसकी परीक्षा में प्रथम तीन स्थान श्रद्धा लुंकड, मंथन लुंकड और लब्धि छाजेड ने प्राप्त किये। अभी दण्डक प्रकरण की विस्तृत विवेचना शिविर के अंतर्गत चल रही है।

पालीताणा मयूर मंदिर की 12वीं ध्वजा संपन्न

पालीताणा स्थित श्री जिन हरि विहार धर्मशाला के श्री आदिनाथ मयूर मंदिर का 12वां वार्षिक ध्वजारोहण का कार्यक्रम अत्यन्त आनन्द व उल्लास के साथ संपन्न हुआ। कायमी ध्वजा के लाभार्थी श्रीमती पुष्पाजी अशोकजी जैन परिवार द्वारा जिन मंदिर पर ध्वजा चढाई गई। प्रातः अठारह अभिषेक का आयोजन किया गया। सतरह भेदी पूजा पढाई गई।

यह समारोह पूज्य गणि श्री पूर्णानंदसागरजी म., पू. मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मोक्षप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मननप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी म. आदि ठाणा एवं पूजनीया खान्देश शिरोमणि श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. प्रियदर्शनाश्रीजी म. आदि साध्वी मंडल की पावन निश्रा में संपन्न हुआ। इस अवसर पर मंत्री श्री बाबुलालजी लूणिया आदि कई ट्रस्टी उपस्थित थे। इस मंदिर की प्रतिष्ठा वि. सं. 2059 कार्तिक सुदि 13 को संपन्न हुई थी।

तिरूनेलवेली में यंत्र स्थापना 7 मार्च को

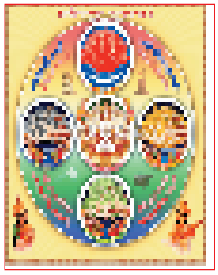

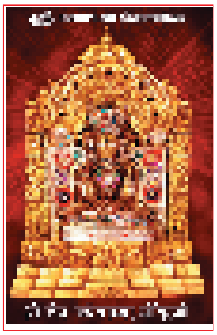

उम्मेदाबाद निवासी श्रीमती मोवनदेवी छगनलालजी चुनाजी भंसाली परिवार के श्री जयन्तिलालजी विमलचंदजी सुरेशकुमारजी दिनेश रूपेश भंसाली परिवार की ओर से श्री मनमोहन पार्श्वनाथ ज्ञान ध्यान मंदिर का उद्घाटन ता. 7 मार्च 2015 चैत्र वदि 2 शनिवार को पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में संपन्न होगा। साथ ही इस मंदिर में श्री नवपद पट्ट का स्थापना की जायेगी। इस अवसर पर श्री सिद्धचक्र महापूजन, स्वामिवात्सल्य आदि का आयोजन किया गया है।

श्री मंगलप्रभातजी लोढा विजयी हुये

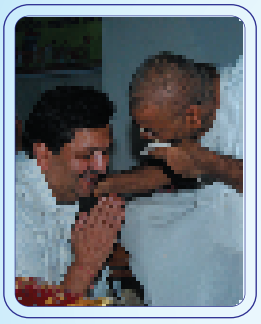

जोधपुर में जन्मे श्री जैन पद्मश्री मंगलप्रभातजी लोढा राजनीति और समाज सेवा के क्षेत्र में सुप्रसिद्ध नाम है। मुंबई के मलबार हिल क्षेत्र से लगातार चार बार विधायक के रूप में चुना जाना श्री लोढाजी की लोकप्रियता और इनकी कार्यक्षमता का अनूठा उदाहरण है।

यह ज्ञातव्य है कि दो वर्ष पूर्व समाज को उनके द्वारा योगदान के लिये श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मंदिर की ओर से उन्हें जैन पद्मश्री से विभूषित करते हुए सम्मानित किया गया था। सरकार द्वारा जब जब भी जैन धर्म के सिद्धान्तों और परम्पराओं के विपरीत कोई प्रस्ताव लाया गया है, तो श्री लोढाजी ने उसका जमकर विरोध किया है और उसमें सफलता प्राप्त की है। भिक्षु बिल हो, चाहे ट्रस्टों में सरकारी हस्तक्षेप का मामला हो, श्री लोढाजी ने अपनी क्षमता का पूरा उपयोग किया है।

गरीबों के लिये शुल्क-मुक्त हॉस्पिटल चलाने वाले श्री लोढाजी ने समाज सेवा के क्षेत्र में खूब कार्य किये हैं।

अपनी धार्मिक आस्थाओं की अभिव्यक्ति के लिये वे जिनमंदिर, धर्मशाला, भोजनशाला, विशाल पुस्तकालय आदि से युक्त लोढा धाम का निर्माण भी करवाया हैं। जहाज मंदिर परिवार द्वारा उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाऐं।

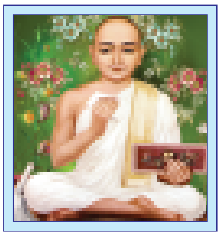

हुबली में अंजनशलाका प्रतिष्ठा एवं दीक्षा की तैयारियां शुरू

हुबली शहर में श्री आदिनाथ जिनालय एवं दादा गुरूदेव श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा 6 दिसम्बर 2014 को होने जा रही है।

पूज्य गुरूदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा की आदि ठाणा की पावन निश्रा में प्रतिष्ठा कार्यक्रम होगा। जिनालय एवं दादावाडी निर्माण पू. साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. एवं श्री पूर्णप्रभाश्रीजी की प्रेरणा एवं उनके अथक प्रयासों से हुआ है।

प्रतिष्ठा के साथ-साथ सोने में सुहागा-रूप छः मुमुक्षु बहिन भी दीक्षा ग्रहण करेंगी। वैराग्यवती सुश्री प्रेमा मांगीलालजी जीरावला एवं वैराग्यवती सुश्री सुमित्रा मांगीलालजी जीरावला-बैंगलोर की रहने वाली है। वैराग्यवती सुश्री ममता तेजराजजी बागरेचा-गंगावती, वैराग्यवती सुश्री शिल्पा जसराजजी ओस्तवाल-गदग, वैराग्यवती सुश्री प्रिन्सी बाबुलालजी कवाड-हुबली एवं वैराग्यवती सुश्री दर्शना वीरचंदजी गोलेच्छा की दीक्षा है तथा ये सभी दीक्षार्थी बहिनें गढ़ सिवाना निवासी है। व सभी साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म., श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. के पास अध्ययनरत है।

उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. का तथा अंजनशलाका प्रतिष्ठा हेतु मूर्तियों का प्रवेश 28 नवम्बर को विशाल साधु-साध्वी वृंद के साथ वरघोडे के रूप में होगा। उसी पावन दिन दीक्षार्थी बहिनों का भी हुबली शहर में प्रवेश होगा। प्रवेश के शुभ दिन संगीत हैदराबाद के संजय कादेडा देंगे।

अष्टाह्निका महोत्सव 30 नवम्बर से शुरू होकर 7 दिसम्बर तक चलेगा।

दि. 2 दिसम्बर से अंजनशलाका व रात्रि भक्ति हेतु सुप्रसिद्ध संगीतकार विनीत गेमावत मुंबई वाले प्रस्तुति देंगे। दि. 4 दिसम्बर को दीक्षार्थी बहिनों की विदाई व अभिनंदन समारोह होगा। विदाई समारोह को निमेश शाह अपनी टीम के साथ भावनात्मक कार्यक्रम की प्रस्तुति देंगे। रोज पूजा-पूजन हेतु भरत ओसवाल कराड वाले आयेंगे तथा सुप्रसिद्ध विधिकारक हेमंतभाई व संजयभाई मक्षी वाले विधान करवायेंगे।

5 दिसम्बर के शुभ दिन भव्य वरघोडा शहर की मुख्य मार्ग से निकलता हुआ दादावाडी पंहुचेगा। वरघोडे में कई तरह की झांकियां एवं नाटिका की प्रस्तुति होगी। इस जुलुस में दीक्षार्थीयों का वर्षीदान भी होगा।

6 दिसम्बर को प्रातः प्रतिष्ठा का विधिविधान उपाध्याय प्रवर की पावन निश्रा में होगा। प्रतिष्ठा के पश्चात दीक्षा महोत्सव होगा। रात्रि में परमात्मा आदिनाथ प्रभु की नाटक प्रस्तुति उज्जैन के मंडल देंगे।

प्रतिष्ठा कार्यक्रम की सम्पूर्ण व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालन के लिये समिति बनाई गई है। जिसके संयोजक रमेशकुमार बाफणा मनोनित किये गये है।

कार्यक्रम की शोभा बढाने हेतु विभिन्न शहरों से भारी मात्रा में गुरूभक्तों के आने की संभावना है। गौरव का विषय है कि जिनके प्रयास से यह विशाल जिनालय दादावाडी निर्मित हुयी है, साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. के संयम जीवन के 50 वर्ष पूरे होने पर विशेष समारोह आयोजित होगा।

प्रेषक पुखराज कवाड़

बहिन म. की 32वीं ओली का पारणा

पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री प्रज्ञांजनाश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री विज्ञांजनाश्रीजी म.सा. ठाणा 5 का चातुर्मास नंदुरबार नगर में अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ चल रहा है।

पर्युषण महापर्व की संपन्नता के पश्चात् भी प्रवचन में बडी संख्या में श्रद्धालु लाभ ले रहे हैं। बाहर से अतिथियों का आगमन भी निरन्तर बना हुआ है।

पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. प्रवचन व लेखन स्वाध्याय के साथ-साथ तपश्चरण में भी लगे हुए हैं। उनके वर्धमान तप की 32वीं ओली का पारणा नंदुरबार में कार्तिक वदि 1 ता. 9 अक्टूबर को संपन्न हुआ।

यह ज्ञातव्य है कि पूजनीया गुरुवर्याश्री ने इसी चातुर्मास में 31वीं ओली भी संपन्न की थी। उसके कुछ ही दिनों बाद यह 32वीं ओली संपन्न की है। जहाज मंदिर परिवार की ओर से कोटि कोटि वंदना के साथ-साथ सुखशाता पूछते हैं।

बाड़मेर चातुर्मास

साध्वी डॉ.सौम्यगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा के सन् 2014 के खरतरगच्छ संघ के इतिहास में किसी एक परिवार द्वारा पहली बार हुए चातुर्मास के लाभार्थी शा. डामरचन्दजी चतुर्भुजजी शांतिलाल नीरजकुमार छाजेड़ परिवार का खरतरगच्छ संघ बाडमेर की ओर से हृदय की गहराईयों से अनुमोदना कर साफा, शॉल, चुनड़ी, तिलक, माला व अभिनन्दन-पत्र भेंट कर बहुमान किया गया। इसी क्रम में छाजेड़ परिवार मण्डल बाड़मेर, खरतरगच्छ युवा परिषद् बाड़मेर, जैन श्री संघ भिवण्डी, आदि संस्थाओं द्वारा भी लाभार्थी परिवार का अभिनन्दन किया गया।

भारत विकास परिषद्

जैन हैल्पिंग ग्रुप मुम्बई के सौजन्य एवं भारत विकास परिषद् सांचौर के तत्वावधान में तगातार तीन दिन तक नेहड़ क्षेत्र एवं नगर पालिका क्षेत्र में गरीब एवं जरूरतमंदों को नि:शुल्क कम्बल एवं बैग वितरण किया गया। नेहड़ क्षेत्र के खेजड़िया, आकोडिया, हाजीपुरा एवं कुकड़िया मे 530 कम्बल एवं बैग वितरण किया गया व नगर पालिका क्षेत्र में 230 एवं महावीर जीवदया गौशाला, सत्यपुर गौशाला, झाब गौशाला में 90 कम्बल एवं थैला वितरण किये गये। इस वितरण में श्री उदाराम वैष्णव, सोहनराज मेहता, अश्विनभाई पटेल, मदनसिंह राजपुरोहित, सांवलचंद संघवी, शिवराम भाई, पारसमल अंगारा, भंवरलाल, अर्जुन देवासी, रमेश देवासी, मदनलाल श्रीमाली, रघुदास वैष्णव का विषेश सहयोग रहा।

जैसलमेर महातीर्थ का ध्वजारोहण

जैसलमेर महातीर्थ के दुर्ग स्थित श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान व सभी जिनालयों का वार्षिक ध्वजारोहण 28 अक्टूम्बर 2014 को संपन्न हुआ। रमीलाबेन जयंतीलाल कालीदास सेठ व समस्त महाजन परिवार ने ध्वजारोहण किया।

ध्वजारोहण में मुख्य अतिथी जिला कलक्टर एन.एल मीना, विशिष्ट अतिथी विधायक छोटुसिंह भाटी, बी.एस.एफ. के उपमहानिरीक्षक अमितजी लोढा, उपखंड अधिकारी डॉ.जी.आर वैष्णव, कार्यवाहक मजिस्ट्रेट पीताम्बरदास राठी थे। इस वर्ष सभी जिनालयों की ध्वजा, नवकारसी, स्वामीवत्सल्य, का संपूर्ण लाभ डीसा मुम्बई निवासी जयंतीभाई के सुपुत्र गिरीश भाई, संदीप भाई शाह परिवार द्वारा लिया गया। प्रात: 10 बजे जैन भवन से ध्वजा कि शोभायात्रा निकाली गई। सभी जिन प्रतिमाएं व दादा गुरुदेव व भैरुजी की पक्षाल पूजा के बाद सभी प्रतिमाओं की अंगरचना की गई। मंदिरों को सजाया गया। सभी श्रद्धालुओं ने ज्ञान भंडार के ग्रंथों की वासक्षेप से पूजा की। जैन ट्रस्ट के ट्रस्टीगण व जैसलमेर जैन श्री संघ के सदस्य आदि उपस्थित थे।

अक्कलकुआं में खात मुहूर्त्त व शिलान्यास

खान्देश के अक्कलकुआं में श्री राणुलालजी डागा परिवार द्वारा जिनमंदिर एवं दादावाडी के लिये समर्पित भूखण्ड पर जिन मंदिर एवं दादावाडी का खात मुहूर्त्त ता. 10 नवम्बर 2014 को एवं शिलान्यास समारोह ता. 12 नवम्बर 2014 को संपन्न होगा। यह दादावाडी श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी चेरिटेबल ट्रस्ट, अक्कलकुआं के अन्तर्गत निर्माण होने जा रही है।

यह समारोह नंदुरबार में चातुर्मासार्थ बिराजमान पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में संपन्न होगा। पूजनीया गुरुवर्याश्री नंदुरबार चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् विहार कर वाण्याविहिर होते हुए ता. 9 नवम्बर को अक्कलकुआं पधारेंगे।

दादावाडी दर्शनम् का प्रकाशन शीघ्र

बहुप्रतीक्षित ऐतिहासिक ग्रन्थ 'श्री दादावाडी दर्शनम्' का प्रकाशन शीघ्र संपन्न होने जा रहा है। पूज्य गुरुदेवश्री का जब चेन्नई (सन् 2005) में चातुर्मास था। तब यह योजना बनाई गई थी कि पूरे भारत में जहाँ जहाँ दादावाडी है या मंदिर में दादा गुरुदेव की प्रतिमा या चरण हैं, उन सब के इतिहास का लेखन किया जाये तथा उसे सचित्र प्रकाशित किया जाये। योजना के प्रथम चरण में तमिलनाडु, कर्णाटक, आन्ध्र प्रदेश, केरल व महाराष्ट्र प्रान्त की दादावाडियों का इतिहास संकलित किया गया। इसके प्रकाशन में कारणवश देर होती गई। अब यह ग्रन्थ अंतिम चरण में है। संभवत: कन्याकुमारी प्रतिष्ठा के अवसर पर ता. 27 फरवरी 2015 को इस ग्रन्थ का विमोचन किया जायेगा।

श्री सच्चियाय देवी महापूजन सम्पन्न

ओसवाल परिवारों की कुलदेवी श्री सच्चियाय माताजी का पूजन मुंबई में दि. 25.9.2014 को लाडवाडी में संपन्न हुआ।

पू. आचार्य श्री शांतिचन्द्रसूरीश्वरजी एवं पू. ज्योतिषाचार्य श्री हेमचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. एवं पू. साध्वी डॉ. श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. के पावन सानिध्य में पूजन सम्पन्न हुआ। श्री सच्चियाय माताजी भक्ति मंडल, मुंबई के तत्वावधान में हुआ।

महापूजन में बेठने वालों 54 जोड़ों को अभिमंत्रित यंत्र प्रदान किया गया। महापूजन को सफल बनाने के लिए महेन्द्र मरड़िया, प्रमोद मेहता, पृथ्वी जैन, हितेश मेहता, पंकज जैन, घेवरचंद मरड़िया, मनीष शाह, अशोक वेदमुथा, जयंति मरड़िया, विक्रम आदि सदस्यो का सहयोग रहा।

गदग में कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना

श्री सिवांची ओसवाल जैन संघ, गदग के तत्वावधान में संपूर्ण जैन समाज के लिये कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गयी। पू. साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 के सानिध्य में प्रातः नौ बजे श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन भवन में प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन हुआ। समारोह में जैन समुदाय के वरिष्ठ नागरिक, युवा भाई-बहिनों एवं बच्चों ने भाग लिया। समारोह के संचालक श्री सुरेश कोठारी एवं मनोज बाफना आदि ने इस केन्द्र की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। शा रूपचंदजी पालरेचा ने रिबीन हटाकर केन्द्र का उद्घाटन किया। प्रशिक्षण केन्द्र में शा रूपचंदजी गौतमकुमार पालरेचा, शा जितेन्द्रकुमारजी कमलेशकुमार जीरावला, श्रीमती जडावदेवी भूरमलजी ओस्तवाल, शा कांतिलालजी हरखचंदजी पालरेचा एवं जैन मेडीकल्स गदग वालों ने एक-एक कम्प्यूटर देकर विद्या दान का लाभ लिया। शा रूपचंदजी गौतमकुमार पालरेचा ने समारोह के पश्चात अल्पाहार का लाभ लिया।

कोलकाता में सवारी का आयोजन

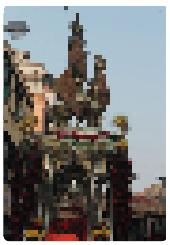

कोलकाता में प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा के दिन परमात्मा की भव्य सवारी का आयोजन किया जाता है। यह आयोजन पिछले 201 वर्षों से किया जाता है। यह सवारी तुलापट्टी स्थित जिन मंदिर से निकलती है, जो दादावाडी पहुँचती है। इस सवारी में परमात्मा धर्मनाथ प्रभु की प्रतिमा को भक्त गण उठा कर भक्ति भावों के साथ चलते हैं। विशाल ऊँची इन्द्रध्वजा व अन्य झांकियों के साथ इस शोभायात्रा का आयोजन होता है। इस शोभायात्रा में लाखों लोग सम्मिलित होते हैं। अन्य शहरों व प्रान्तों से इस सवारी के दर्शन करने के लिये प्रतिवर्ष हजारों श्रद्धालु बाहर से आते हैं।

पुण्यतिथि मनाई

बीकानेर में सुगनजी उपासरा में महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म. की नवमी पुण्यतिथि निमित्त पंचाह्निका महोत्सव का आयोजन किया गया।

महोत्सव में निश्रा साध्वी श्री मनोरंजनाश्रीजी म. सुभद्राश्रीजी म. आदि ठाणा ने प्रदान की।

इस अवसर पर दि. 4 अक्टुबर को गुणानुवाद सभा, अठारह अभिषेक, पार्श्वपद्मावती महापूजन, सिद्धचक्र महापूजन एवं दादा गुरुदेव की पूजा संपन्न हुयी।

मालपुरा में भव्य भक्ति संध्या 31 दिसम्बर को

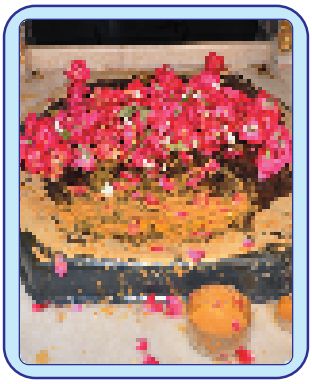

कलिकाल कल्पतरू दादा गुरूदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी म. की प्रत्यक्ष दर्शन स्थली श्री मालपुरा तीर्थ में 31 दिसम्बर 2014 को रात्रि में भव्य भक्ति संध्या का आयोजन रखा गया है। इस आयोजन में पार्श्वगायन में देश की विख्यात कलाकार अनुराधाजी पोडवाल अपनी टीम के साथ दादा गुरूदेव की भक्ति करेंगी।

दि. 1 जनवरी 2015 को प्रात: 10 बजे दादा गुरूदेव की पूजा का आयोजन रखा गया है। पूजा पढाने हेतु बॉलिवुड के प्रसिद्ध गायक श्री संजयजी विद्यार्थी अपने साथियों के साथ पधारेंगें।

इस अवसर पर पूज्या सरलमना साध्वी श्री चन्द्रकलाश्रीजी म. आदि ठाणा एवं पूज्या सज्जनमणि साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा अपनी सानिध्यता प्रदान करेंगे। यह संपूर्ण आयोजन दादा गुरूदेव के भक्त श्री चन्द्रप्रकाशजी प्रकाशचन्दजी लोढा परिवार जयपुर वालों द्वारा आयोजित किया जा रहा है। लोढा परिवार द्वारा सभी गुरूभक्तों को इस अवसर पधारने का निवेदन है।

नंदुरबार में महापूजन का आयोजन

पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से नंदुरबार नगर में शनि दोष निवारक परमात्मा श्री मुनिसुव्रतस्वामी के महापूजन एवं 18 अभिषेक का आयोजन कार्तिक शुक्ल 3 ता. 26 अक्टॅबर 2014 को किया गया। पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में संपन्न हुए इस महापूजन का संपूर्ण लाभ श्रीमती स्वरूपदेवी मोडमलजी श्रीश्रीमाल परिवार द्वारा किया गया। पूजनीया गुरुवर्याश्री सकल श्री संघ के साथ मणिधारी आराधना भवन से सुबह 7 बजे प्रस्थान कर लाभार्थी परिवार के राजेन्द्र फॉर्म हाउस पधारे। वहाँ पर श्री संघ की नौकारसी के पश्चात् महापूजन का प्रारंभ हुआ।

यह महापूजन यहाँ पहली बार हो रहा था, इस कारण इस महापूजन में लाभ लेने के लिये लोग बडी संख्या में पधारे। महापूजन के बाद लाभार्थी परिवार की ओर से साधर्मिक भक्ति का आयोजन किया गया। महापूजन एवं अठारह अभिषेक का विधि विधान कराने इन्दौर से सुप्रसिद्ध विधिकारक अरविन्द भाई चौरडिया संगीत मंडली के साथ पधारे थे। इस अवसर पर बडी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे।

शेरगढ़ में नवपद ओली आराधना

पू.सज्जनमणि साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. की शिष्या साध्वी श्री संयमप्रज्ञाश्रीजी म. व साध्वी श्री अनन्तदर्शनाश्रीजी म. की पावन प्रेरणा व निश्रा में श्री जैन संघ शेरगढ में नवपद ओली की आराधना आराधना पूर्वक संपन्न हुयी।

दि. 7 अक्टुबर को श्री सिद्धचक्र महापूजन गंगारामजी लुणिया परिवार द्वारा व दि. 8 अक्टुबर को दादा गुरुदेव का महापूजन गुणेशमलजी लुणिया परिवार द्वारा पढाया गया।

साधु साध्वी समाचार

पूज्य मुनिराज ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म. अपने शिष्य पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. के साथ नवसारी में ऐतिहासिक व यशस्वी चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् विहार कर सूरत, अहमदाबाद होते हुए ब्रह्मसर पधारेंगे।

पूज्य गणि श्री पूर्णानंदसागरजी म. पालीताना श्री जिन हरि विहार में बिराज रहे हैं।

पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म. की निश्रा में चौहटन नगर में महामंगलकारी उपधान तप का प्रारंभ होने जा रहा है। ता. 19 नवम्बर से उपधान तप का प्रारंभ होगा। ता. 7 जनवरी 2015 को माला विधान होगा।

पूज्य कुशल मुनिजी म. ठाणा 4 अहमदाबाद से विहार कर जावरा पधारेंगे। जहाँ निर्मित अष्टापद तीर्थ पर उनकी निश्रा में महामंगलकारी उपधान तप की आराधना होगी। उपधान तप का प्रारंभ 10 दिसम्बर 2014 से होगा। माला विधान ता. 1 फरवरी 2015 को होगा।

पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. इचलकरंजी चातुर्मास के पश्चात् पूना की ओर विहार करेंगे। वहां से कल्याण भिवंडी वापी सुरत वडोदरा होते हुये पालीताना पधारेंगे।

पूजनीया खान्देश शिरोमणि साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 पालीताना श्री जिन हरि विहार धर्मशाला में बिराजमान है।

पूजनीया माताजी म. श्री रतनमाला श्रीजी म.सा. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा नंदुरबार के प्रभावक चातुर्मास के बाद अक्कलकुआं की ओर विहार करेंगे। जहाँ उनकी निश्रा में जिन मंदिर दादावाडी का खात मुहूर्त्त, शिलान्यास होगा।

पूजनीया साध्वी श्री सम्यक् दर्शना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा चेन्नई चातुर्मास के पश्चात् विचरण करते हुए कन्याकुमारी की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा अहमदाबाद चातुर्मास संपन्नता पर विहार कर चौहटन पधारेंगे। जहाँ उपधान तप महोत्सव को अपनी सानिध्यता प्रदान करेंगे।

पूजनीया साध्वी डॉ. श्री शासन प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा अहमदाबाद से चातुर्मास पूर्णाहुति के पश्चात् खान्देश की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा बैंगलोर से हुबली की ओर विहार करेंगे।

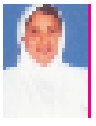

पूजनीया साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा बीजापुर से एवं पूजनीया साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा गदग से हुबली की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 इचलकरंजी चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् सोलापुर होते हुए नागपुर की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म. आदि ठाणा तिरूपातूर में चातुर्मास संपन्न कर विहार करेंगे। उनकी पावन निश्रा में तिरूपातूर से कृष्णगिरि होते हुए सुशीलधाम तक छह री पालित पद यात्रा संघ का आयोजन होने जा रहा है। वहाँ से बैंगलोर पधार कर अपनी गुरुवर्याश्री के साथ हुबली की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया छत्तीसगढ रत्ना महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा 3 भुज कच्छ में ऐतिहासिक प्रभावक चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् कच्छ की पंचतीर्थी की यात्रा करेंगे।

पूज्यश्री का कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा कुंभोजगिरि संघ के पश्चात् हुबली की ओर विहार करेंगे। जहाँ ता. 6 दिसम्बर 2014 को पूज्यश्री की निश्रा में आदिनाथ जिन मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा एवं छह वैराग्यवती बालिकाओं की भागवती दीक्षा संपन्न होगी। वहाँ से 7 दिसम्बर को विहार कर कोप्पल, गदग होते हुए ता. 12 दिसम्बर को हॉस्पेट पधारेंगे। जहाँ उनकी निश्रा में श्री पार्श्व पद्मावती आराधना भवन का उद्घाटन होगा। वहाँ से विहार कर ता. 14 को बल्लारी पधारेंगे। जहाँ ता. 15 दिसम्बर को कुमारी शिल्पा बालड की भागवती दीक्षा होगी। वहाँ से पूज्यश्री बैंगलोर की ओर विहार करेंगे।

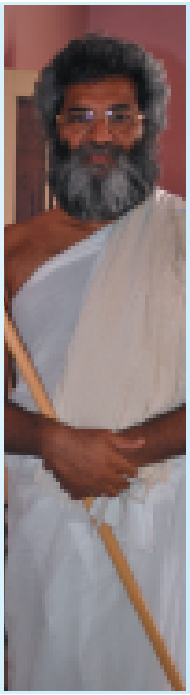

संपर्क सूत्र-
पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.
VIJAYRAJ DOSI
APANA INVESTMENT,
60 KILLARI ROAD, BANGALORE-560003 (KNTK.)
संपर्क - मुकेश : 097843 26130, 098251 05823

महाराष्ट्र राज्य विधानसभा चुनाव-2014 में विजयी जैन उम्मीदवार

1. **श्री मंगलप्रभातजी गुमानमलजी लोढा** - मलबार हिल विधानसभा क्षेत्र, मुंबई
2. **श्री चैनसुखजी मदनलालजी संचेती** - मलकापुर विधानसभा क्षेत्र, जि. बुलढाणा
3. **श्री प्रशांतजी बन्सीलालजी बंब** - गंगापुर विधानसभा क्षेत्र, जि. औरंगाबाद
4. **श्री राजेन्दजी सुखनंदजी पाटणी** - कारंजा विधानसभा क्षेत्र, वाशिम
5. **श्री नरेन्द्रजी लालचंदजी मेहता** - मिरा भाईंदर विधानसभा क्षेत्र, जि. ठाणा

जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक अभिनंदन

जहाज मंदिर के नये संरक्षक

- पूजनीया गुरुवर्या श्री वीरप्रभाश्रीजी म.सा. की 22वीं पुण्यतिथि एवं पूजनीया गुरुवर्या श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. विश्वज्योतिश्रीजी म. जिनज्योतिश्रीजी म. के चातुर्मास के उपलक्ष्य में उनकी पावन प्रेरणा से

श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, जलगांव (महाराष्ट्र)

- पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से

श्री अशोककुमार कालुचंदजी वरदाजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचोर-मुंबई

सादर श्रद्धांजली

श्रीमती मोहिनीदेवी रांका

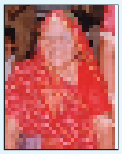

परम श्रद्धा संपन्न श्रावक प्रवर श्री समरथमलजी रांका की धर्मपत्नी श्रीमती मोहिनीदेवी का स्वर्गवास ता. 21 सितम्बर को चेन्नई नगर में नवकार महामंत्र की आराधना के साथ हो गया। वे ८९ वर्ष के थे। रांका परिवार की ओर से पालीताना में पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि विशाल साधु साध्वी मंडल का ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न हुआ था।

आपका स्वभाव धार्मिक था। प्रतिदिन सामायिक, सेवा पूजा करते थे। दादा गुरुदेव के प्रति आपकी अखण्ड श्रद्धा थी। जहाज मंदिर परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक श्रद्धांजली समर्पित है।

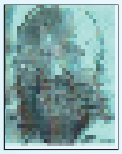

जैसलमेर निवासी **श्री राजेन्द्रकुमारजी बापना** का आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे जैसलमेर के आगेवान श्रावक थे। उनके स्वर्गवास से गच्छ व संघ को क्षति हुई है। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली।

मूल गढ सिवाना वर्तमान में गुण्टुर निवासी **श्री रिखबचंदजी चौपडा** का स्वर्गवास हो गया। वे समाज के आगेवान श्रावक थे। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली।

पू. साध्वी गुरूवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित

श्री मुनिसुव्रतस्वामी मंदिर दादावाडी तीर्थ से सुशोभित

श्री जिनकुशल हेम विहारधाम

जोधपुर-जालोर मुख्य मार्ग पर, जोधपुर से 90 कि.मी., जालोर से 50 कि.मी.।
आवास भोजन की सुन्दर व्यवस्था। दर्शन, पूजा हेतु अवश्य पधारें।

निवेदक- शा. केवलचन्दजी छोगालालजी संकलेचा परिवार

संपर्क- 099784 02271, 099505 22754

चौहटन में उपधान तप

राजस्थान की धन्यधरा चौहटन नगर में पंच मंगल महाश्रुतस्कंध श्री उपधान तप आराधना मिगसर वदि 12 बुधवार दिनांक 19.11.2014 को पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरिजी म. के शिष्य प्रशिष्य परम पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.सा. एवं पूज्य मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में प्रारम्भ होने जा रहा है। जिसके लिये चौहटन नगर में आयोजन की तैयारियां जोरों पर है।

उपधान तप की आराधना के लिए 21 परिवारों ने मिलकर इस आयोजन में अपना योगदान अर्पण किया है। विधिवत् उपधान तप समिति एवं उपसमितियों का गठन किया गया है जिससे सम्पूर्ण व्यवस्थायें सुचारू रूप से संचालित हो। परम पूज्य गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की प्रत्यक्ष कृपा से उनके सुशिष्यों द्वारा उपधान तप भावपूर्ण विधि से यह उपधान तप सम्पन्न होगा। उपधान के लिये प्रथम प्रवेश मिगसर वदि 12 बुधवार दिनांक 19.11.2014 तथा द्वितीय प्रवेश मिगसर वदि 14 शुक्रवार दिनांक 21.11.2014 को तथा मोक्ष माला विधान माघ वदि 2 बुधवार दिनांक 07.01.2015 को सम्पन्न होगा। इस उपधान में पूज्या प्रखर व्याख्यात्री श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. श्री शिष्या साध्वी कल्पलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा तथा पूज्या प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या एवं संघमणि श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की चरणाश्रिता साध्वी डॉ. सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का सानिध्य रहेगा। श्री कुशलकांति उपधान तप आराधना समिति, चौहटन ने सभी से उपधान तप में जुडने का आव्हान किया है।

बालोतरा जसोल प्रवासी संघ, मुंबई

बालोतरा जसोल प्रवासी संघ, मुंबई की कार्यकारिणी सभा का आयोजन हुआ। जिसकी अध्यक्षता विजय जीरावला ने की। इसमें 15 कार्यकर्ताओं को कार्यकारिणी में लिया गया।

प्रवासी संघ के चुनाव सर्वसम्मति से हुये, जिसमें अध्यक्ष पद श्री भंवरलालजी बोकडिया, उपाध्यक्ष पद पर श्री अमृतलालजी कटारिया सिंघवी, मंत्री पद पर श्री सुरेश बंदामुथा और कोषाध्यक्ष पद पर श्री निलेश श्रीश्रीमाल को कार्यभार सौंपा गया।

प्रेषक- जसराज खिंवसरा

श्री खरतरगच्छ महिला परिषद्, अहमदाबाद

पूज्या गुरुवर्या श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की सुशिष्या पूज्या साध्वी डॉ शासनप्रभाश्रीजी म. एवं पूज्या साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म. की पावन प्रेरणा एवं सानिध्यता में अहमदाबाद के शाहीबाग में श्री खरतरगच्छ महिला परिषद् का गठन किया गया।

परिषद् के अध्यक्षा पद की जिम्मेदारी श्रीमती मंजुलाबेन भरतभाई मेहता एवं उपाध्यक्ष पद की जिम्मेदारी श्रीमती पुष्पाबेन अजयकुमारजी भंसाली को दी गयी। अहमदाबाद में खरतरगच्छ समाज में महिलाओं का यह प्रथम संगठन है।

'जीव विचार प्रश्नोत्तरी' पर परीक्षा संपन्न

इंदौर में पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनिवर श्री मनितप्रभसागरजी म.सा द्वारा आलेखित पुस्तक 'जीव विचार प्रश्नोत्तरी' पर सौ. मीना अनिलजी बैद-इन्दौर ने लिखित परीक्षा का आयोजन रखा जिसमें लगभग 45 प्रतियोगियों ने भाग लिया। इस परीक्षा में प्रथम स्थान आशा बम्बोरी, द्वितीय स्थान मनोरमा खाब्या तथा तृतीय स्थान चन्द्रकान्ता सराफ ने प्राप्त किया। सभी का वैद परिवार की ओर से अभिनंदन किया गया। जीव तत्त्व का सम्पूर्ण बोध देने वाली सरल भाषा एवं प्रवाहमयी शैली में आलेखित जीव विचार प्रश्नोत्तरी घर-घर में सहेजने योग्य है जिससे जीव तत्त्व का ज्ञान प्राप्त कर हम अन्य स्थूल-सूक्ष्म प्राणी जगत के प्रति मैत्री और करूणा भरा व्यवहार कर सके।

जहाज मंदिर पहेली-100 का सही उत्तर

1. सुकौशल मुनि-सिंहनी 2. नंदीषेण मुनि-हाथी 3. अवन्ति सुकुमाल-सियालनी 4. राजकुमारी सुदर्शना-समडी (चील) 5. सम्राट् कुमारपाल-मकोडा 6. मेतारज मुनि-क्रोंच 7. भगवान अरिष्टनेमि-मृग आदि 8. वासुदेव श्री कृष्ण-गाय, 9. बलभद्र मुनिवर-हरिण 10. राजा मेघरथ-कबूतर 11. श्रीपाल-मगरमच्छ, 12. मुनिसुव्रत स्वामी-अश्व 13. महासती सीता-जटायु 14. गर्दभाली मुनि-मृग 15. धर्मरूचि अणगार-चींटी 16. अकबर प्रतिबोधक जिनचन्द्रसूरि-बकरी 17. सती दमयन्ती-सिंह 18. परमात्मा आदिनाथ-बैल

पुरस्कार विजेता

प्रथम पुरस्कार- मनोहरलाल झाबख-कोटा

छह प्रेरणा पुरस्कार- शांतिबाई पारख-धमतरी, विनीता छाजेड-बूंदी, मधु जैन-ऊटी, सीमा भण्डारी-ब्यावर, वीणा जैन-जयपुर, सूरज मालू-रायपुर।

इनके उत्तर सही थे- साध्वी विशालप्रभाश्रीजी-पालीताणा, साध्वी प्रज्ञांजनाश्रीजी-नंदुरबार, साध्वी दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी-नंदुरबार, सीमा छाजेड-उज्जैन, लता चोरडिया-जयपुर, चन्द्रसिंहजी जैन-उदयपुर, संगीता गोलछा-कोण्डागॉव, किरण बैदमुथा-रायपुर, प्रज्ञा जैन-रायपुर, इन्द्रा देवी संखलेचा-हैदराबाद, पुष्पलता नाहटा-जयपुर, सीमा जैन, निर्मला सिसोदिया-जयपुर, मीत भंडारी-जयपुर, कमलेश भंडारी-जयपुर, मधु खवाड-किशनगढ, भूरचंद मालू-जोधपुर, विमला देवी संकलेचा-हैदराबाद, निर्मला जैन-उदयपुर, नमिता जैन-उदयपुर, सरला गोलछा-लालबर्रा, भंवरलाल गोलेच्छा-अक्कलकुवा, ईशिता बेंगानी-बीकानेर, प्रमिला बेंगानी-बीकानेर, भंवरलाल संकलेचा-अक्कलकुवा, सुनीता जैन-जयपुर, चंदनबाला बाफना-नंदुरबार, पिस्ता गोलछा-जयपुर, जयश्री कोठारी-भायंदर, किरणदेवी मेहता-भायंदर, सरसलता जैन-दिल्ली, नरेन्द्र कोचर-भायंदर, चंद्रा कोचर-भायंदर, फीणीबेन बाफना-कोट्टूर, सुशीला कोचर-अक्कलकुवा, मेघा कोचर-अक्कलकुवा, कुसुमदेवी बेंगानी-रायपुर, दर्शन चौपड़ा-कोट्टूर, चुनाली धारीवाल-कोट्टूर, मनोहरी देवी बाफना-नंदुरबार, सोहन झाबक-बड़ोदरा, कुशल कोठारी-अमलनेर, जयश्री कोठारी-ऊटी, भवरीदेवी गोलच्छा-ऊटी, सुशीला भण्डारी, तारा बाई कोठारी-भायंदर।

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, सांचोर

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, सांचोर के चुनाव सर्वसहमति से संपन्न हुये।

दि. 25-10-2014 को अध्यक्ष श्री मनोहरजी कानुगो की अध्यक्षता में साधारण सभा हुयी, जिसमें श्री मांगीलालजी जावंतराजजी श्रीश्रीश्रीमाल-मौलाणी को अध्यक्ष एवं श्री जगदीशकुमारजी छगनलालजी बोथरा को उपाध्यक्ष पद पर चुना गया। सर्व साधारण सभा ने अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष को शासन एवं गच्छ की प्रगति के लिये शुभकामनायें देते हुये बधाई दी।

प्रेषक- प्रदीप श्रीश्रीश्रीमाल

तत्त्व परीक्षा

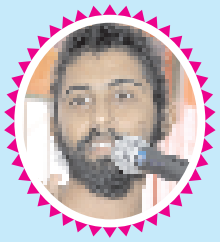

मुनि मनितप्रभसागरजी म.

जहाज मंदिर पहेली 103

निम्न बॉक्स में प्रश्नों के उत्तर भरिये। बॉक्स के आस-पास प्रश्नों की संख्या अंकित की गयी है।

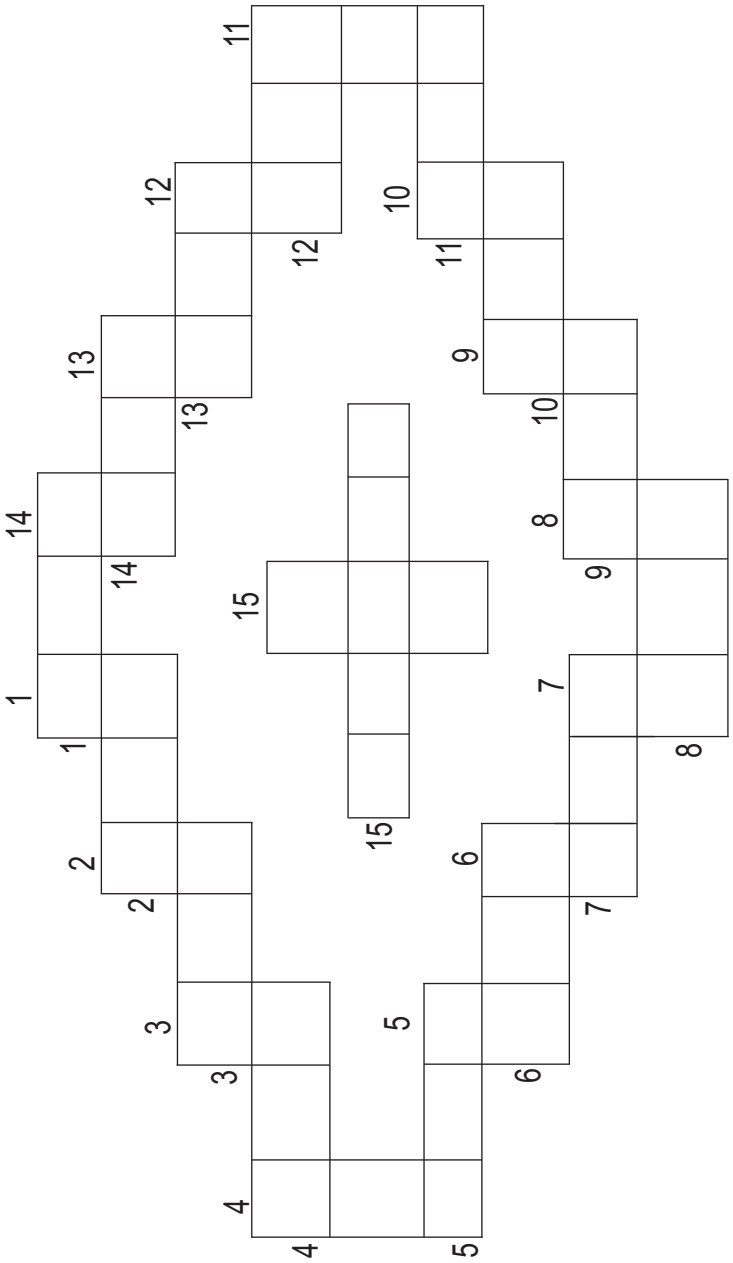

बायें से दायें-

1. काल, वक्त (3)
2. मुश्किल, समस्या (3)
3. पांच ज्ञानों में से एक (3)
4. संयम, वैराग्य (3)
5. नीरज, पद्म (3)
6. जिस श्रेणी से जीव केवलज्ञानी बनता है। (3)
7. एक परीषह (3)
8. .... वैचारिक नामक आगम (3)
9. विष, हलाहल (3)
10. अचलभ्राता गणधर की गोत्र (3)
11. मणि (3)

12 अनुत्तर विमान के पांच भेदों में से एक (3)

13. मोर (3)
14. शय्यंभवसूरि के पुत्र मुनि (3)
15. संयम का एक मुख्य उपकरण (5)

ऊपर से नीचे-

1. हमेशा, नित्य (2)
2. विधा, तरकीब (2)
3. ज्यादा, बहुत (2)
4. जो सही और गलत का बोध करवाये (3)
5. लाख (2)
6. बन्दर, हरि (2)
7. सोते समय कितने नवकार गिनने चाहिये-(2)
8. आठ प्रकार की पूजा में से एक, पानी, नीर (2)
9. माला, पराजय (2)
10. झुका हुआ (2)
11. एक नदी (3)
12. सूर्य, दिनकर (2)
13. अल्प, थोडा (2)
14. मृत्यु (2)
15. परमात्मा महावीर ने निर्वाण से पूर्व 16..... देशना दी थी (3)

जहाज मन्दिर पहेली 103 झेरॉक्स करके ही भरें व इस पत्ते पर भेजे →

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.
द्वारा: सोहनलाल एम. लुणिया
तेजदीप स्टील, 74 भण्डारी स्ट्रीट, पहला कुंभारवाडा लेन,
मुम्बई-400 004 (महा.) मो. 98693 48746

- नियम -

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 दिसम्बर तक पहुँचना जरुरी है ।
2. विजेताओं के नाम व सही हल जनवरी में प्रकाशित किये जायेंगे ।
3. प्रथम विजेताओं को 200 रू. का और 100-100 रु. के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. सातों विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. जहाज मन्दिर पहेली प्रेषक इस पहेली की झेरॉक्स करवाकर भेजे।
7. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
8. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-
शा. सुगनचंदजी राजेशकुमारजी बरडिया (छबड़ा) ब्रह्मसर हाल चैन्नई

प्रेषक

नाम .....

पता .....

.....

पोस्ट ..... पिन | | | | | | | जिला .....

राज्य ..... फोन नम्बर | | | | | | | | | | | |

जहाज मंदिर पहेली-101 का सही उत्तर

1. कायिकी	2. अधिकरणिकी	3. पारितापनिकी	4. प्राणातिपातिकी
5. आरंभिकी	6. पारिग्रहिकी	7. दृष्टिकी	8. प्रातित्यकी
9. स्वहस्तिकी	10. आज्ञापनिकी	11. वैदारणिकी	12. अनाभोगिकी
13. प्रेमिकी	14. द्वैषिकी	15. प्रायोगिकी	16. सामुदानिकी
17. ईर्यापथिकी	18. स्पृष्टिकी	19. नैशस्त्रिकी	

पुरस्कार विजेता

प्रथम पुरस्कार- अंकिता रामपुरिया-मालपुरा।

छह प्रेरणा पुरस्कार- आकांक्षा चौपडा-भानुप्रतापपुर, शेफाली जैन-बून्दी, मनीषा लुणिया-ऊंटी, पुष्पा जैन-निम्बाहेड़ा, करिश्मा कोठारी-अमलनेर, अदिति सोलंकी-ब्यावर।

इनके उत्तर पत्र सही थे- साध्वी विशालप्रभाश्रीजी म.-पालीताणा, नीतिप्रज्ञाश्रीजी म.-अहमदाबाद, निष्ठांजनाश्रीजी म.-इचलकरंजी, मनीला पारख-जयपुर, झवरीलाल बच्छावत-फलोदी, संतोष भंडारी-कोटा, सूरज मालु-रायपुर, इन्द्रा संकलेचा-हैदराबाद, सोहन झाबक-बड़ौदा, उम्मेदराज धारीवाल-कोटूर, कृष्णा कोचर-भानपुरा, नीरज जैन-उदयपुर, रूचिका जैन-बाड़मेर, इन्दु सुराणा-जहाजपुर, विजय डाकलिया-जगदलपुर, दीपक चपलोत-भाण्डूप, रूचि पगारिया-रायपुर, पवन तातेड़-अहमदाबाद, सोनाक्षी सुराणा-जहाजपुर, परेश जैन-खापर, सुंदर कानुंगा-इचलकरंजी, तेजपाल पारख-कोलकाता, वरूण कुमार-कोटा, अरिहंत दर्शन-कोटूर, सम्राट् एल.-वेलुर, कमलाबेन जैन-सिवाना, सरोज जैन-ब्यावर, कमलेश जैन-कोटा, वसंती वैद-कुरिंजीपाडी, शांति गांधी-जोधपुर, प्रेम दुगड-जयपुर, सुरभि कोठारी-बुन्दी, सज्जन छाजेड-कोटा, अंकिता छाजेड-इन्दौर, चन्द्रप्रकाश छाजेड-चौहटन, श्वेता कोचर-तलोदा, सीमा जैन-जयपुर, सुचित्रा भंसाली-नोयडा, किरण मुथा-रायपुर, सुलोचना चोरडिया-खापर, संगीता बुरड़-ब्यावर, जयश्री कोठारी-भायन्दर, सुभद्रा भंडारी-मानपुरा, पारस भंडारी-कोटा, मनोरमा लोढा-कोटा, मनीष बाफना-नंदुरबार, मनोहरीदेवी बाफणा-नंदुरबार, ममता बाफणा-नंदुरबार, आरजू डोसी-ब्यावर, कंचनलता चौपडा-गुडीयारी, मधु जैन-ऊंटी, मनोहर झाबक-कोटा, भंवरी गोलेछा-ऊंटी, अजय डागा-अक्कलकुवा, सुनीता जैन-जयपुर, प्रक्षाल धारीवाल-कोटूर, कामिनी मेहता-जोधपुर, धर्मिष्ठा बोथरा-खापर, विद्या लोढा-सारंगखेडा, जितेश भंसाली-तिरूपात्तुर, प्रियंका संकलेचा-अक्कलकुवा, भंवरलाल संकलेचा-अक्कलकुवा, मंजु कांस्टिया-कोलकाता, पद्मा वैद-चैन्नई, विनीता छाजेड-बूंदी, अजय रामपुरिया-मालपुरा, शोभा वैद-पनरूटी, सुरेखा धारीवाल-कोटूर, पंकज जैन-अजमेर, कुसुम बेंगानी-रायपुर, संगीता गोलछा-कोण्डागाँव, जयश्री कोठारी-ऊंटी, पुष्पलता नाहटा-जयपुर, दिव्या चपलोत-भाण्डूप, कुशल पगारिया-रायपुर, अंतिमा भंसाली-इचलकरंजी, सुन्दरी राखेचा-त्रिची, सीमा भण्डारी-ब्यावर, समता कांकरिया-ब्यावर, शकुन्तला कांकरिया-हैदराबाद, ममता जैन-दिल्ली, भारती चोपडा-उज्जैन, सरसलता जैन-दिल्ली, निर्मला बच्छावत-फलोदी, पिस्ता गोलेछा-जयपुर, राजेन्द्र गांधी-यादगिरि, लक्ष्य बांठिया-हैदराबाद, धनसुख छाजेड-हैदराबाद ।

आजीवन साहित्य योजना में लाभ लें–

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में जहाज मंदिर कार्यालय से श्री रतनमाला प्रकाशन के अन्तर्गत विभिन्न विषयों पर उपयोगी साहित्य का निरन्तर प्रकाशन हो रहा है। तत्वज्ञान, कथाऐं, प्रवचन, विधि-विधान आदि विभिन्न विषयों पर अत्यन्त समसामयिक साहित्य का प्रकाशन होता है। जो बहुत ही लोकप्रिय हो रहा है। प्रतिवर्ष 8 से 10 पुस्तकें प्रकाशित होती है।

साहित्य प्रकाशन को अभिनव स्वरूप प्रदान करते हुए पूज्यश्री की प्रेरणा से संस्थान द्वारा एक आजीवन योजना बनाई गई है। जिसके अन्तर्गत 51 हजार रूपये की राशि प्रदान करने वाली संस्था या परिवार के सात नाम संस्थान द्वारा प्रकाशित होने वाली हर पुस्तक में साहित्य संरक्षक के रूप में प्रकाशित किया जायेगा।

इसी प्रकार 25 हजार रूपये की राशि प्रदान करने वाली संस्था या परिवार के चार नाम संस्थान द्वारा प्रकाशित होने वाली हर पुस्तक में साहित्य समाराधक के रूप में प्रकाशित किये जायेंगे।

अभी तक जिन्होंने इस योजना में लाभ प्राप्त किया है, उनके नाम इस प्रकार है–

श्रुत संरक्षक

0 श्री जैन श्वे. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादावाडी संघ, इचलकरंजी

0 श्री जिनहरि विहार समिति, पालीताना

0 पूजनीया प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से श्री जिनकुशलसूरि सेवाश्रम संस्थान, कुशल वाटिका, बाडमेर

0 श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाडी ट्रस्ट, बसवनगुडी, बैंगलोर

0 श्री भूरचंदजी प्रकाशचंदजी चंपालालजी जितेन्द्रकुमारजी मोहित आशिष दिव्यांश धारीवाल, चौहटन-बाडमेर

0 मातुश्री मोहिनीदेवी ध.प. सूरजमलजी छाजेड की प्रेरणा से सौ. कांतादेवी जगदीशचंदजी, खुशबू नितेशकुमार, सौरभ छाजेड परिवार, हरसाणी-इचलकरंजी

0 मातुश्री पिस्तादेवी के आशीर्वाद से श्री ऋषभलालजी मांगीलालजी केसरीमल जी अमृतलाल अभयकुमार बेटा पोता छगनलालजी छाजेड, सिवाना-इचलकरंजी-पाली

0 मातुश्री ढ़ेलीदेवी ध.प. श्री पीरचंदजी वडेरा की स्मृति में श्री बाबूलालजी किशनलालजी चम्पालालजी भूरचंदजी गौतमचंदजी वडेरा परिवार, बाडमेर-इचलकरंजी-मालेगांव

0 श्री आशारामजी वख्तावरमलजी खेमचंदजी लालचंदजी सुरेशकुमारजी सचिनकुमारजी मयूरकुमारजी नाहटा, सिवाना-इचलकरंजी-नागपुर

0 स्व. मातुश्री परमेश्वरीदेवी स्व. पिताश्री सुल्तानमलजी बोहरा की पावन स्मृति में घेवरचंदजी ओमप्रकाशजी अशोक कुमारजी सुरेशकुमारजी दिनेशकुमारजी रतनपुरा बोहरा भिंयाड वाले, बाडमेर-इचलकरंजी

0 मातुश्री सुकीदेवी देरामचंदजी की प्रेरणा

से दीपचंदजी नेमीचंदजी शांतिलालजी मगराजजी रमेशकुमारजी भंसाली, समदडी-इचलकरंजी-सूरत

0 मातुश्री श्रीमती देवी ध.प. श्री रिखबदासजी छाजेड की प्रेरणा से अशोककुमार परमेश्वरीदेवी पवनकुमार रितिककुमार दर्शनकुमार छाजेड बाडमेर-इचलकरंजी

0 श्रीमती भंवरीदेवी नेमीचंदजी की प्रेरणा से श्री जगदीशचंदजी संपतराजजी रमेशचंदजी जसराजजी बाबुलालजी छाजेड, बाडमेर-इचलकरंजी

0 मातुश्री स्व. मोहनीदेवी ध.प. स्व. श्री राणामलजी मेहता की स्मृति में बाबुलालजी भूरचंदजी सम्पतराजजी मांगीलाल सवाई अंकित मेहता, बाडमेर-इचलकरंजी-मालेगांव

0 श्रीमती पारसीबाई रतनचंदजी सौ. किरणबाई प्रकाशचंदजी सचिन जिनेश समृद्ध चौपडा बिलाडा वाले, हैदराबाद

0 संघवी श्री माणकचंदजी सौ. सुशीलादेवी पुत्र अरूणकुमार सौ. कवितादेवी विवेककुमार सौ. डिम्पलदेवी पुत्र पौत्र श्री वरदीचंदजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी-अहमदाबाद

0 श्री देवीचंदजी रतनलालजी छोगालालजी नरेशकुमार मुकेशकुमार कपिलकुमार विकासकुमार वडेरा, बाडमेर-इचलकरंजी

0 मातुश्री स्व. बबरीदेवी ध.प. शा. केसरीमलजी की पुण्य स्मृति में मातुश्री ढ़ेलीदेवी ध.प. स्व. शिवलालचंदजी की प्रेरणा से पुत्र बाबुलालजी ओमप्रकाशजी पारसमलजी छाजेड (कवास वाले)बाडमेर-इचलकरंजी

0 श्री भंवरलालजी सौ. सुआदेवी पुत्र ओमप्रकाश सौ. सुमित्रादेवी अशोककुमार सौ. संगीतादेवी बेटा पोता श्री विरधीचंदजी छाजेड, बाडमेर-मुंबई

0 स्व. श्रीमती पानीबाई लक्ष्मीचंदजी स्व. श्रीमती पवनबाई मांगीलालजी श्रीमती डाली हेमन्तजी श्रीमती अर्चना संदीपजी परमार, कोयम्बतूर-बाली

0 सांचोर निवासी बोहरा पारसमलजी हंजारीमलजी पुत्र श्री बाबुलालजी घेवरचंदजी मोतीलालजी, विनस मेटल कॉर्पो. मुंबई

श्रुत समाराधक

0 पू. खान्देश शिरोमणि गुरुवर्या श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. की प्रेरणा से श्री जैन श्वे. मू.पू. संघ जलगांव की श्राविकाओं की ओर से

0 श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, हैदराबाद

0 श्रीमती मोहिनीदेवी भंवरलालजी मांगीलालजी कुशल कुमार संखलेचा, फलोदी-अक्कलकुआं

0 श्री प्रकाशचंदजी पंकजकुमारजी मनीषकुमारजी महावीर जी भंडारी, सोजतरोड-इचलकरंजी

0 श्री मांगीलालजी ललितकुमार बेटा पोता खीमराजजी भीखचंदजी छाजेड, रामसर-इचलकरंजी

0 श्री संपतराजजी सौ. चंचलदेवी पुत्र अभिषेककुमार रवीन्द्रकुमार बाबेल, बिजयनगर

0 मातुश्री मोहिनीदेवी की प्रेरणा से श्री ओमप्रकाशजी रमेशकुमारजी सुनिलकुमारजी बैदमुथा, कवास वाले-इचलकरंजी

0 श्रीमती पुतलाबाई इन्द्रभानजी पुत्र शा. पृथ्वीराजजी पौत्र चेतनकुमारजी बोरा, नाशिक रोड़

0 शा. पुखराजजी दिनेशकुमारजी उगमराज पुत्र पौत्र उदयचंदजी ललवाणी सिवाणा-इचलकरंजी

श्रुत सहयोगी

0श्री मदनलालजी भंवरलालजी बोथरा, बाडमेर-इचलकरंजी

0 श्री बाबुलालजी मुलतानमलजी मालू, बाडमेर-इचलकरंजी

0 श्रीमती शांतिप्रभा रंगरूपमलजी लोढा, चेन्नई

0 श्री दिनेशकुमारजी बाबूलालजी मालू, हरसाणी-इचलकरंजी

0 श्री फूलचंदजी टेकचंदजी छाजेड, डुठारिया-पूना

0 श्री पारसमलजी सूरजमलजी छाजेड, डुठारिया-पूना

0 श्री बंशीलालजी प्रकाशचंदजी कटारिया, बिलाडा-रेणीगुण्टा

0 श्री फरसराजजी महावीरचंदजी सिंघवी, बाडमेर-इचलकरंजी

0 श्री विजयराजजी महेन्द्रजी कटारिया, बिलाडा-मैसूर

0 श्री मुकेशकुमारजी मोहनलालजी संखलेचा, बाडमेर-इचलकरंजी

जटाशंकर

जटाशंकर म्यूझियम देखने के लिये गया था। वह घूम-घूम कर फटी आंखों से कलाकृतियों को निहार रहा था।

अचानक सामने वाले चित्र को देख कर वह डर के मारे जोर-जोर से रोने लगा। चीखने और चिल्लाने लगा। पास खडे म्यूझियम के कर्मचारी को डांट कर कहा- कैसा चित्र लगा रखा है तुम लोगों ने! ऐसे खतरनाक चित्र को देख कर मेरी तो डर के मारे जान ही निकल जाती! इसे तुरंत हटाया जाये। आज मैं डरा हूँ, कल कोई और डरेगा!

कर्मचारी चित्र को देख कर हँसने लगा... फिर बोला- भाई साहब! सामने कोई चित्र नहीं है।

- तो फिर यह डरावना चेहरा क्या है!

कर्मचारी बोला- सामने तो केवल दर्पण है। आपका चेहरा ही उसमें दिखाई दे रहा है।

असल में सबसे डरावना चेहरा हमारा ही है। हम अपना चेहरा देख कर ही तो डरते हैं। अपने स्वरूप को सुहाना बनाना ही, अभय हो जाना है। अपना स्वरूप, अपना स्वभाव मीठा हो जाये, फिर कोई डर नहीं! फिर सदा मुस्कुराओ! अपने स्वभाव को बदलना ही आनंद की उपलब्धि है।

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.

आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरिजी की पुण्यतिथि के उपलक्ष में महोत्सव

श्री पार्श्वनाथ जैन श्वे. मंदिर, बल्लारी के तत्वावधान में पूज्या पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका श्री सुलोचनाश्रीजी म. तपोरत्ना श्री सुलक्षणाश्रीजी म. की शिष्या पू. समतामूर्ति साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म., मधुर व्याख्यानी साध्वी डॉ.श्री प्रियलताश्रीजी म., डॉ.श्री प्रियवंदनाश्रीजी म. आदि ठाणा 7 की निश्रा में आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरिजी की पुण्यतिथि के उपलक्ष में पंच दिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया।

दि. 8 से 12 अक्टुबर तक चले महोत्सव में श्री गौतमस्वामी महापूजन (लाभार्थी-गौतम ट्रेडर्स), श्री तिजयपहुत महापूजन(लाभार्थी-हीरा नोवेल्टीज), श्री दादा गुरूदेव महापूजन(लाभार्थी-सिंघवी ओडिट), अठारह अभिषेक विधान(लाभार्थी-एम.एम. ट्रेडर्स), श्री पद्मावती देवी महापूजन का आयोजन किया गया, जिसमें सभी ने उत्साह से भाग लिया। साथ ही सामुहीक इकतीसा का जाप श्री सुरजमलजी की ओर से रखा गया।

आयोजन में श्री चुन्नीलालजी, बाबुलालजी, सुरजमलजी आदि का पूरा सहयोग रहा।

चतुर्थ पुण्यतिथि पर हार्दिक

श्रद्धांजली

जन्म
03.06.1973

स्वर्गवास
06.12.2010

श्रीमती सवितादेवी शांतिलालजी मेहता

दूर हो जाने से बहिन का प्यार कभी कम नहीं होता..!
तुझे याद ना करूं दी.. ऐसा कोई मौसम नहीं होता..
ये वो रिश्ता है जो उम्र भर महकता है..!
तेरा हाथ सिर पर हो तो मुश्किलों में भी गम नहीं होता..
तेरी बहिन होने का खुद पर नाज हमें..!
दूर होकर भी तूं दूर नहीं ये अहसास हमें..

कभी सोचती है हम तेरी याद में..!
तुम कहीं से बस आ जाओ यह अहसास हमें..
उम्र भर अपने हर दुख-सुख को मिलकर बांटा है..!
'हम साथ-साथ है' यही नगमा सुनाता है हर साज हमें
दी.. आप हमारे लिये अनमोल हो और हमेशा रहोगे..!
इस रिश्ते पर होता है आज सबसे ज्यादा नाज हमें..

सौ. कमला मेहता, सौ. सीमा मेहता, सौ. सुशीला मेहता, सौ. पायल बोकड़िया

प.पू. बहिन म. डॉ. साध्वी श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या
साध्वी श्री नीतिप्रज्ञा श्रीजी म.सा. की आप सांसारिक बहिन थी।

शा. कालुचंदजी अशोककुमार श्रीश्रीश्रीमाल
फर्म
मणि स्टील इण्डस्ट्रीज
मुम्बई
फोन : 022-67437943

शा. शांतिलालजी मेहता
रोहित कुमार रीतिक कुमार मेहता
फर्म : रोहित एल्युमिनियम एजेन्सी
अहमदाबाद
फोन : 079-27553586

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2012- 2014 Date of Posting 7th

श्री आदिनाथाय नमः
दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः
पू. गणनायक श्री सुखसागरसद्गुरुभ्यो नमः

श्री हुबली नगर की पावन धरा पर

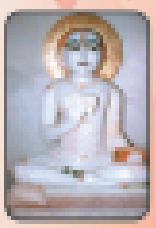

श्री आदिनाथ जिनमंदिर एवं दादावाडी की भव्यातिभव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा दीक्षा समारोह

अष्टाह्निका महोत्सव प्रसंगे

पावन निश्रा
पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्य
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

सादर सस्नेह आत्मीय आमंत्रण

पावन प्रेरणा
मारवाड ज्योति पूज्या श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.
स्नेह सुरभि पूज्या श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म.

दीक्षा एवं प्रतिष्ठा शुभ दिवस
वि. सं. 2071 मिगसर सुदि 15 शनिवार दि. 6.12.2014

वैराग्यवती मुश्री प्रेमा
मांगीलालजी जीरावला

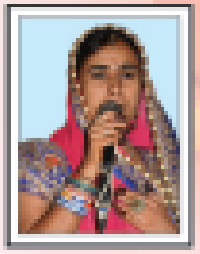

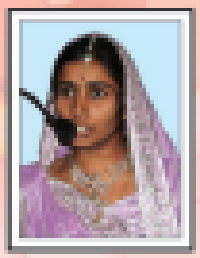

वैराग्यवती मुश्री सुचिता
मांगीलालजी जीरावला

वैराग्यवती मुश्री ममता
नेनमलजी वागरेचा

वैराग्यवती मुश्री शिल्पा
जसराजजी ओस्तवाल

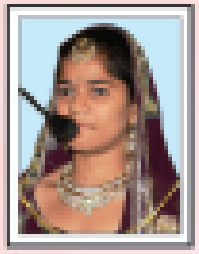

वैराग्यवती मुश्री डिम्पी
बाबुलालजी कवाड

वैराग्यवती मुश्री दर्शना
कीरचंदजी गोलेछा

निवेदक - श्री आदिनाथ जिनमंदिर जिनकुशलसूरि दादावाडी ट्रस्ट

गब्बुर रोड, हुबली-580028 कर्नाटक, फोन 0836 4261809, मो. 094484 68512

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मंदिर, मांडवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256640
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org